क्रियात्मक कार्य

चित्र के आधार पर कहानी लिखिए।

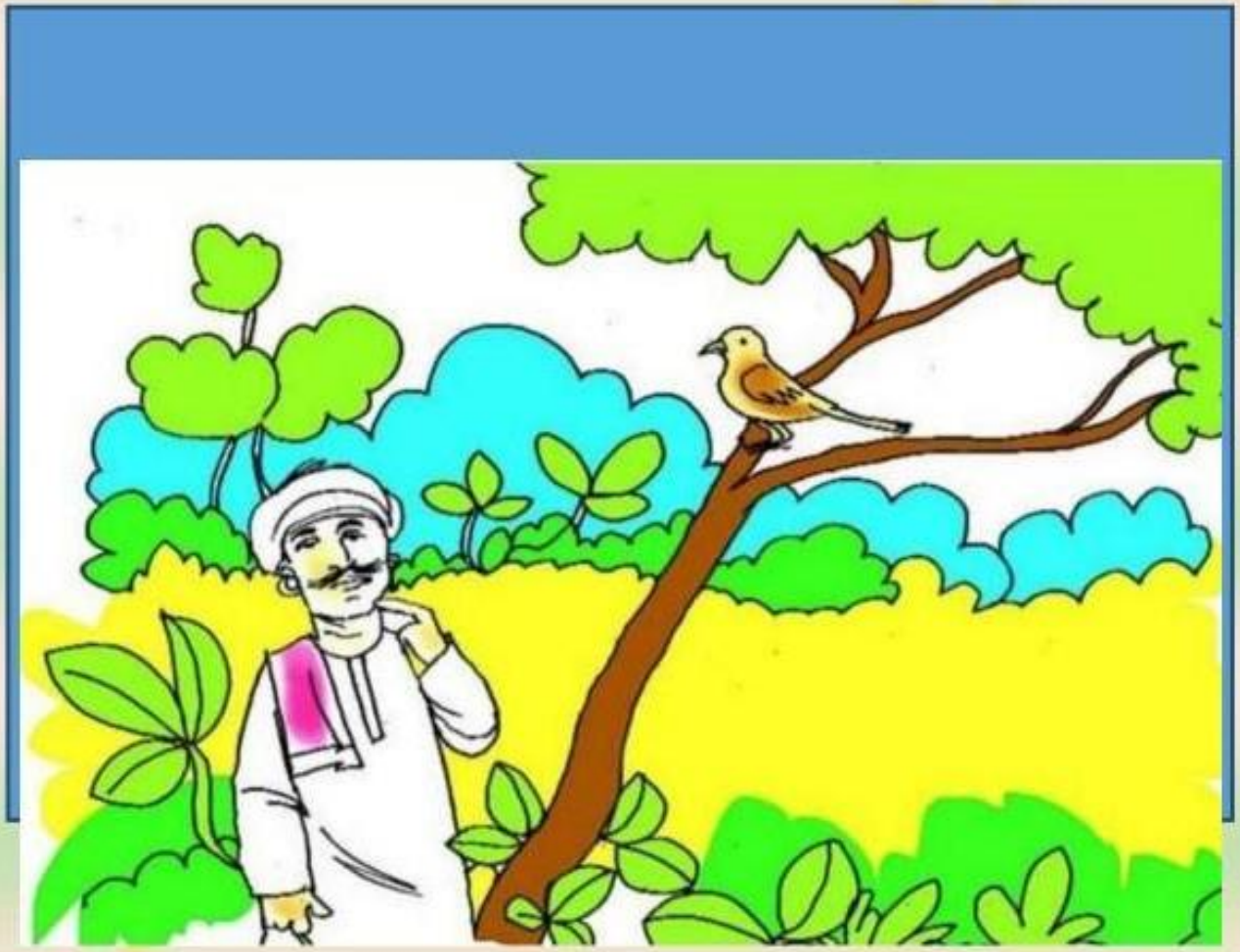

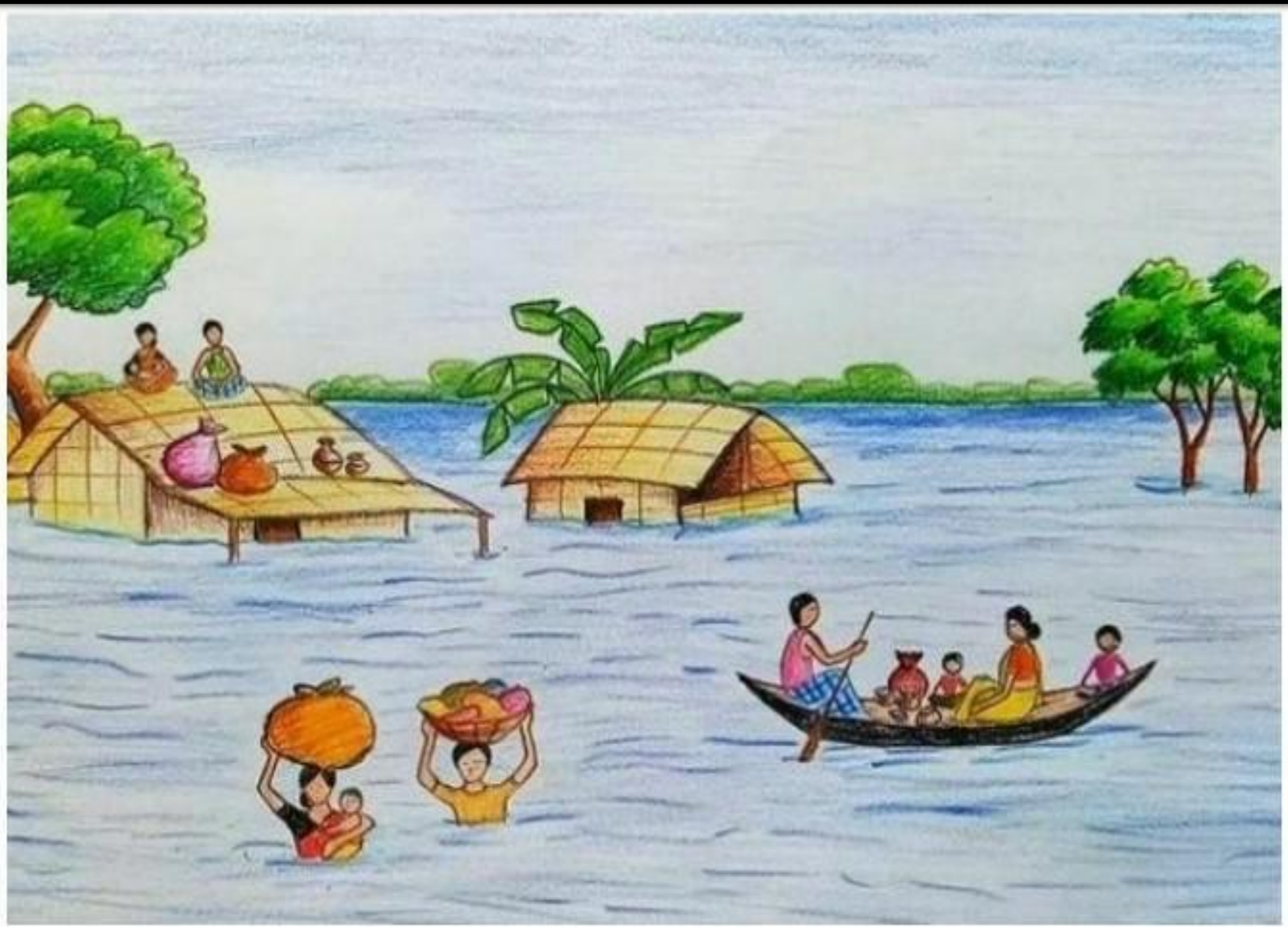

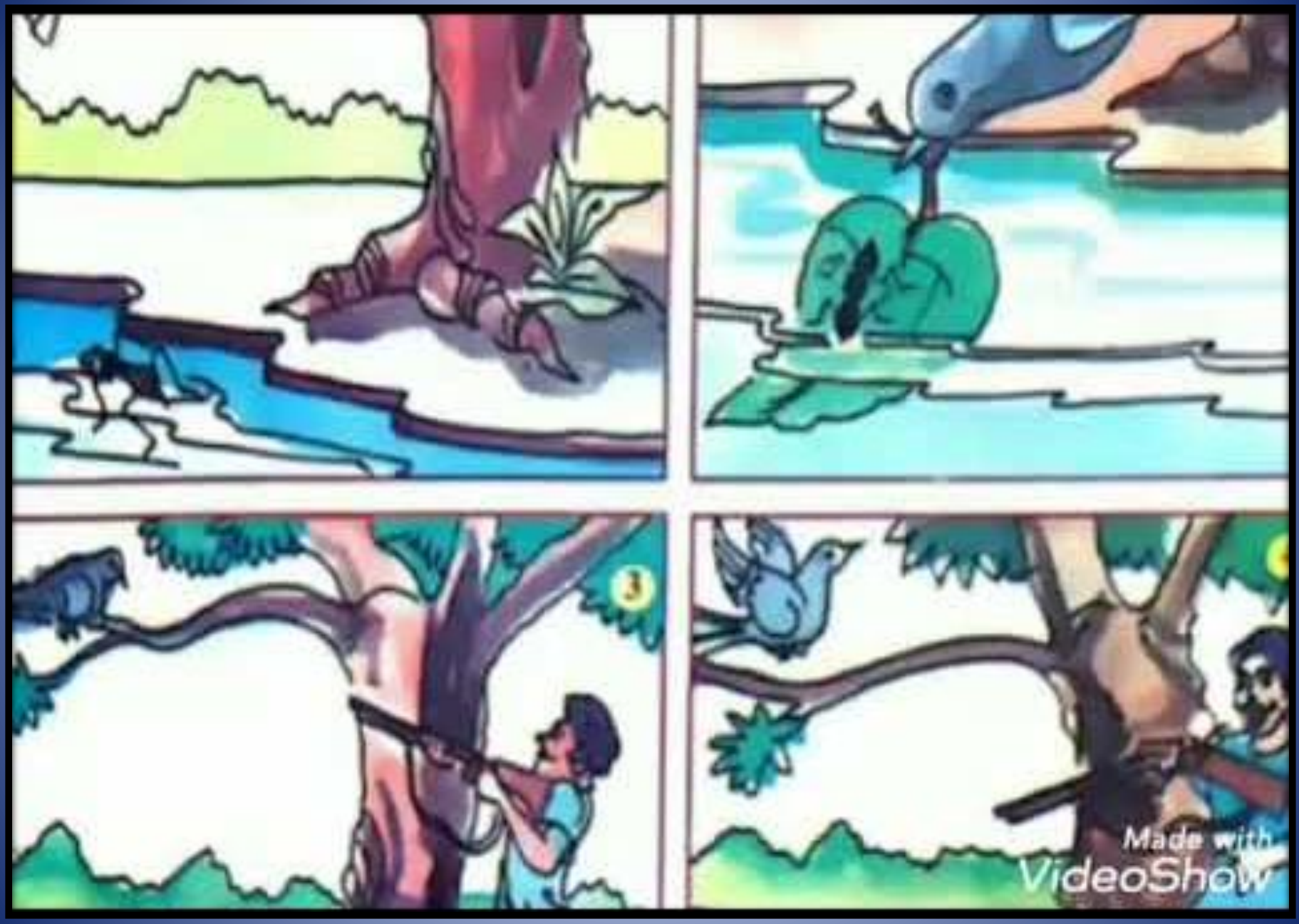
Made with
VideoShow

20) नीचे दिये गए चित्र के आधार पर अपने शब्दों में कहानी लिखिए।

नीचे दिए गए प्रस्थान बिंदुओं के आधार पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघु कथा लिखिए–

(i) मेरे बचपन की सहेली कांता शरारती और स्वभाव से अव्यवस्थित-सी थी।

(ii) किताब-कॉपी, फलों के छिलके इधर-उधर फेंकना उसकी आदत बन गई थी।

(iii) गरमी की छुट्टी में वह मामा जी के पास शिमला घूमने गई।

(iv) उनकी बेटी कविता उसकी हमउम्र, सफ़ाई पसंद एवं विनम्र बालिका थी।

(v) कांता ने आइसक्रीम खाकर डिब्बा रास्ते में फेंक दिया।

(vi) कविता ने शर्म महसूस करते हुए खाली डिब्बे को कूड़ेदान में फेंका।

(vii) लज्जित कांता ने साफ़-सफ़ाई रखने का मन ही मन निश्चिय कर लिया। उसे आत्मानुशासन का अर्थ समझ में आ गया था।

(i) मेरी दादी जी ने बचपन में मुझे ईमानदार और दयालु दर्ज़ी की कहानी सुनाई थी।

(ii) उस समय के राजा-महाराजा और साधारण लोग उसी दर्ज़ी के सिले कपड़े पहनते थे।

(iii) काम अधिक होने के कारण उसने अपने लड़के को सिलाई का काम सिखाया।

(iv) सरोवर में नहाने के लिए जाते समय राजा का हाथी दर्ज़ी को सलाम करता था।

(v) दर्ज़ी उसे गुड़ और रोटी खिलाता था। एक दिन लड़के ने उसकी सूँड़ में सुई चुभा दी।

(vi) नहाकर लौटते हुए हाथी ने सूँड़ में भरा पानी बिखेर दिया।

(vii) कपड़े गीले और गंदे हो गए। उसे करनी का फल भोगना पड़ा।

नीचे दिए गए प्रस्थान बिंदुओं के आधार पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघु कथा लिखिए–

(*i*) एक अहंकारी राजा था।

(*ii*) उसे अपनी दानवीरता का बड़ा घमंड था।

(*iii*) एक दिन एक साधु उसके दरबार में आया।

(*iv*) उसने दान में चावल माँगे, जो प्रतिदिन अपनी संख्या के अनुसार चौगुने होते जाएँ।

(*v*) धीरे-धीरे राजा का भंडार खाली होने लगा।

(*vi*) राजा को अपनी भूल समझ में आई। उसने साधु से क्षमा माँगी।

अथवा

(*i*) एक बार जंगल में आग लग गई।

(*ii*) जंगल में बड़ी भगदड़ मची।

(*iii*) जंगल का राजा गुफ़ा में सो रहा था।

(*iv*) आग देखकर वह भी डर गया पर हिम्मत करके नदी किनारे सभा बुलाई।

(*v*) जंगल को छोड़कर न जाने की बात कही।

(*vi*) हाथियों ने अपनी सूँड़ में पानी भरकर आग पर डालना शुरू किया। आग बुझ गई।

(*vii*) हमें मुसीबत की घड़ी में धैर्य से काम लेना चाहिए।

खंड–'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)

(लेखन)

(26 अंक)

13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए–

(*i*) **विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता**

संकेत-बिंदु–• अनुशासनहीनता के बुरे परिणाम • अनुशासनहीनता के कारण होने वाली परेशानी • देश के विकास के लिए विद्यार्थियों के आचरण पर ध्यान आवश्यक

(*ii*) **वृक्षों का महत्त्व**

संकेत-बिंदु–• मानव जीवन और वृक्ष • वृक्षों का वैज्ञानिक महत्त्व • वर्षा कराने में वृक्षों का योगदान

(*iii*) **परिश्रम का महत्त्व**

संकेत-बिंदु–• श्रम का महत्त्व • सफलता के लिए परिश्रम आवश्यक है • परिश्रम ही मूलमंत्र है

14. अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें फ़ीस में छूट देने के लिए निवेदन किया गया हो।

अथवा

मनीऑर्डर खो जाने की शिकायत करते हुए रोहिणी, नई दिल्ली के डाकपाल को पत्र लिखिए।

15. विद्यालय में हो रही कविता प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु कक्षा नौ से बारहवीं तक के सभी विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए लगभग 30-40 शब्दों में एक सूचना लिखिए।

अथवा

विद्यालय परिसर में आपकी घड़ी कहीं गिर गई है। घड़ी खोने से संबंधित लगभग 30-40 शब्दों में एक सूचना लिखिए।

16. किसी फाइनेंस कंपनी के लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

अथवा

किसी सीमेंट कंपनी के लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

17. **नीचे दिए गए प्रस्थान बिंदुओं के आधार पर लगभग**

thank
you

पतझड़ में टूटी पत्तियां

रवींद्र केलेकर

प्रश्न 1 चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं ?

उत्तर :- चाजीन द्वारा अतिथियों का उठकर स्वागत करना, आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, चाय के बर्तन लाना, तौलिए से पोछ कर चाय डालना आदि सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण, अच्छे व सहज ढंग से कीं।

प्रश्न 2 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों ?

उत्तर :- भाग-दौड़ की ज़िंदगी से दूर भूत-भविष्य की चिंता छोड़कर शांतिमय वातावरण में कुछ समय बिताना इस जगह का उद्देश्य होता है। इसलिए इसमें केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था।

प्रश्न 3 चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया ?

उत्तर :- चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि उसका दिमाग सुन्न होता जा रहा है, उसकी सोचने की शक्ति धीरे-धीरे मंद हो रही है। इससे सन्नाटे की आवाज भी सुनाई देने लगी। उसे लगा कि भूत-भविष्य दोनों का चिंतन न करके वर्तमान में जी रहा हो। उसे बहुत सुख मिलने लगा।

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए–

प्रश्न 4 लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर :- लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के कारण बताएँ हैं कि मनुष्य चलता नहीं दौड़ता है, बोलता नहीं बकता है, एक महीने का काम एक दिन में करना चाहता है, दिमाग हज़ार गुना अधिक गति से दौड़ता है। अत: तनाव बढ़ जाता है। मानसिक रोगों का प्रमुख कारण प्रतिस्पर्धा के कारण दिमाग का अनियंत्रित गति से कार्य करना है।

प्रश्न 5 लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट ।

उत्तर :- लेखक के अनुसार सत्य वर्तमान है। उसी में जीना चाहिए। हम अक्सर या तो गुजरे हुए दिनों की बातों में उलझे रहते हैं या भविष्य के सपने देखते हैं। इस तरह भूत या भविष्य काल में जीते हैं। असल में दोनों काल मिथ्या है। वर्तमान ही सत्य है,उसी में जीना चाहिए।

कारतूस

हबीब तनवीर

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर लिखिए :-

प्रश्न 1 :- वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी ?

उत्तर :- वज़ीर अली रॉबिनहुड की तरह साहसी, हिम्मतवाला और बहादुर था। वह भी रॉबिनहुड की तरह किसी को भी चकमा देकर भाग जाता था। वह अंग्रेज़ी सरकार की पकड़ में नहीं आ रहा था। कम्पनी के वकील को उसने मार डाला था। उसकी बहादुरी के किस्से सुनकर ही कर्नल को रॉबिनहुड की याद आती थी।

प्रश्न 2 :- सआदत अली कौन था? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा ?

उत्तर :- सआदत अली वज़ीर अली का चाचा और नवाब आसिफउदौला का भाई था। जब तक आसिफउदौला के कोई सन्तान नहीं थी, सआदत अली की नवाब बनने की पूरी सम्भावना थी। इसलिए उसे वज़ीर अली की पैदाइश उसकी मौत लगी।

प्रश्न 3 :- सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था ?

उत्तर :- सआदत अली आराम पसंद अंग्रेज़ों का पिट्ठू था। अंग्रेज़ कर्नल को उसे तख्त पर बिठाने का मकसद अवध की धन सम्पत्ति पर अधिकार करना था। उसने अंग्रेज़ों को आधी सम्पत्ति और दस लाख रूपये दिए। इस तरह सआदत अली को गद्दी पर बैठने से उन्हें लाभ ही लाभ था।

प्रश्न 4 :- कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाज़त कैसे की ?

उत्तर :- कंपनी के वकील की हत्या करने के बाद वज़ीर अली आजमगढ़ भाग गया और वहाँ के नवाब ने उसकी सहायता की। उसे सुरक्षित घागरा पहुँचा दिया। तब से वह वहाँ के जंगलों में रहने लगा।

प्रश्न 5 :- सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया ?

उत्तर :- सवार, वज़ीर अली था। वह कर्नल के खेमे में कारतूस लेने आया था और बड़ी चतुराई से वज़ीर अली का कर्मचारी बनकर आया। जाते समय कर्नल ने नाम पूछा तो उसने वज़ीर अली बताया। वज़ीर अली को सामने देखकर कर्नल हक्का-बक्का रह गया।

प्रश्न 6 :- लेफ़्टीनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है?

उत्तर :- लेफ़्टीनेंट को जब कर्नल ने बताया कि कंपनी के खिलाफ़ केवल वज़ीर अली ही नहीं बल्कि दक्षिण में टीपू सुल्तान, बंगाल में नवाब का भाई शमसुद्दौला भी है। इन्होंने अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहेज़मा को आक्रमण के लिए निमत्रंण दिया है। यह सब देखकर लेफ़्टीनेंट को आभास हुआ कि कंपनी के खिलाफ़ पूरे हिन्दूस्तान में लहर दौड़ गई है।

प्रश्न 8 :- वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल क्यों किया ?

उत्तर :- वज़ीर अली को उसके नवाबी पद से हटा दिया गया और बनारस भेज दिया गया। फिर कलकत्ता बुलाया तो वज़ीर अली ने कंपनी के वकील, जोकि बनारस में रहता था, उससे शिकायत की परन्तु उसने शिकायत सुनने की जगह खरीखोटी सुनाई। इस पर वज़ीर अली को गुस्सा आ गया और उसने वकील का कत्ल कर दिया।

प्रश्न 9 :- सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए ?

उत्तर :- वज़ीर अली अकेला ही घोड़े पर सवार होकर अंग्रेज़ों के खेमे में पहुँच गया और कर्नल को दिखाया कि वह भी वज़ीर अली के खिलाफ़ है। उसने कर्नल से अकेले में मिलने के लिए कहा। कर्नल मान गया और वज़ीर अली के दस कारतूस माँगने पर उसने दे दिए परन्तु जाते-जाते अपना नाम बता गया जिससे कर्नल हक्का-बक्का रह गया।

प्रश्न 10 :- वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- वज़ीर अली को अंग्रेज़ों ने अवध के तख्ते से हटा दिया पर उसने हिम्मत नहीं हारी। वज़ीफे की रकम में मुश्किल डालने वाले कंपनी के वकील की भी हत्या कर दी। अंग्रेज़ों को महीनों दौड़ाता रहा परन्तु फिर भी हाथ नहीं आया। अंग्रेज़ों के खेमे में अकेले ही पहुँच गया, कारतूस भी ले आया और अपना सही नाम भी बता गया। इस तरह वह एक जाँबाज़ सिपाही था।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए – (समझाने हेतु)

मुट्ठीभर आदमी और इतना दमखम।

उत्तर :- इस पंक्ति में वज़ीर अली के साहस और वीरता का परिचय है। वह थोड़े से सैनिकों के साथ जंगल में रह रहा था। अंग्रेज़ों की पूरी फ़ौज उसका पीछा कर रही थी फिर भी उसे पकड़ नहीं पाई।

2 सपनों के से दिन

गुरुदयाल सिंह

प्रश्न 1:- कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती–पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता हैं ?

उत्तर :- बच्चे जब मिलकर खेलते हैं तो उनका व्यवहार, उनकी भाषा अलग होते हुए भी एक ही लगती है। भाषा अलग होने से आपसी खेल कूद, मेल मिलाप में बाधा नहीं बनती। इस पाठ में भी लेखक ने बचपन की घटना को बताया है कि कोई बच्चा हरियाणा से, कोई राजस्थान से है। सब अलग-अलग भाषा बोलते हैं परन्तु खेलते समय सब की भाषा सब समझ लेते थे। उनके व्यवहार में इससे कोई अंतर न आता था।

प्रश्न 2 :- पीटी साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी। स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- पीटी साहब प्रीतमचन्द अनुशासन प्रिय थे वे बच्चों को कभी अनुशासन के लिए कभी पढ़ाई के लिए डांटते रहते थे परन्तु जब बच्चे कोई भी गलती न करते प्रार्थना के समय सीधी कतार बना कर खड़े रहते तो पी. टी. साहब उन्हें 'शाबाश' कहते। बच्चे 'शाबाश' शब्द सुनकर खुश होते और उन्हें लगता कि जैसे फौज में सिपाही को तमंगे दिए जाते हैं वैसा ही तमगा उन्हें भी मिल गया है।

प्रश्न 3 :- नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था ?

उत्तर :- आगे की श्रेणी की कठिन होती पढ़ाई तथा नए शिक्षकों द्वारा होने वाली मार-पीट के भय से लेखक का बालमन नयी कापियों और पुरानी किताबों की गंध से उदास हो जाता था।

प्रश्न 4 :- स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था ?

उत्तर :- स्काउट परेड में लेखक साफ़-सुथरी धोबी से धुली ड्रेस पहनता। पॉलिश बूट तथा जुराब पहनकर लेखक ठक-ठक करके चलता था। मास्टर प्रतीमचंद द्वारा परेड के समय

राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न कहने पर छोटे छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या कदम मिलाकर चलता, तो वह अपने आपको फ़ौजी से कम नहीं समझता था। अकड़कर चलता तो अपने अंदर एक फ़ौजी जैसी आन-बान-शान महसूस करता था।

प्रश्न 5 :- हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअतल कर दिया ?

उत्तर :- एक दिन मास्टर प्रीतमचंद ने कक्षा में बच्चों को फ़ारसी के शब्द रूप याद करने के लिए दिए । परन्तु बच्चों से यह शब्द रूप याद नहीं हो सके। इसपर मास्टर जी ने उन्हें मुर्गा बना दिया। बच्चे इसे सहन नहीं कर पाए कुछ ही देर में लुढ़कने लगे। उसी समय नम्र हृदय हेडमास्टर जी वहाँ से निकले और बच्चों की हालत देखकर सहन नहीं कर पाए और पीटी मास्टर को मुअत्तल कर दिया। इसी कारण प्रीतमचंद कई दिनों से स्कूल नहीं आ रहे थे ।

प्रश्न 6 :- लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा ?

उत्तर :- लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल जाना बिल्कूल अच्छा नहीं लगता था परन्तु जब स्कूल में रंग बिरगें झंडे लेकर, गले में रूमाल बाँधकर मास्टर प्रीतमचंद परेड करवाते थे, तो लेखक को बहुत अच्छा लगता था। सब बच्चे ठक-ठक करते राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अवाउट टर्न करते और मास्टर जी उन्हें शाबाश कहते तो लेखक को पूरे साल में मिले 'गुड्डों' से भी ज़्यादा अच्छा लगता था। इसी कारण लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा।

प्रश्न 7 :- लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था ?

उत्तर :- लेखक के स्कूल की छुट्टियाँ होती और उसमें जो काम करने के लिए मिलता उसे पूरा करने के लिए लेखक समय सारणी बनाता। कौन-सा काम, कितना काम एक दिन में पूरा करना है। लेकिन खेल कूद में लेखक का समय बीत जाता और काम न हो पाता। धीरे-धीरे समय बीतने लगता तो लेखक ओमा नामक ठिगने और बलिष्ठ लड़के जैसा बहादुर बनना चाहता था जो उद्दंड था और काम करने के बजाए पिटना सस्ता सौदा समझता था।

प्रश्न 8 :- पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- पीटी सर शरीर से दुबले-पतले, ठिगने कद के थे, उनकी आँखे भूरी और तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी और लम्बे जूते पहनते थे। वे बहुत अनुशासन प्रिय थे। बच्चे उनका कहना नहीं मानते तो वे दंड देते थे। वे कठोर स्वभाव के थे, उनके मन में दया भाव न था। बाल खीचना, ठुडढे मारना, खाल खीचना उनकी आदत थी। इनके साथ वे स्वाभिमानी भी थे।

नौकरी से निकाले जाने पर वे हेडमास्टर जी के सामने गिड़ गिड़ाए नहीं बल्कि चुपचाप चले गए।

प्रश्न 9 :- विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :- पाठ में अनुशासन रखने के लिए कठोर दंड, मार-पीठ जैसी युक्तियाँ अपनाई गई हैं परन्तु वर्तमान में यह निंदनीय माना गया है। आजकल अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे बच्चे की भावनाओं को समझें, उनके कामों के कारण को समझे, उन्हें उनकी गलती का एहसास कराए तथा उनके साथ मित्रता व ममता का व्यवहार रखें। इससे बच्चे स्कूल जाने से डरेंगे नहीं बल्कि खुशी खुशी आएँगे।

प्रश्न 10 :- बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए ।

विद्यार्थी यह प्रश्न अपने अनुभव के आधार पर करें ।

प्रश्न :- प्राय: अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज़्यादा रूचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं बताइए –

(क) खेल आपके लिए क्यों ज़रूरी हैं ।

(ख) आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो

उत्तर :- (क) खेल मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद हैं। इससे शरीर स्वस्थ रहता है, बच्चे अनुशासित रहते हैं तथा प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ती है। साथ ही साथ प्रतिस्पर्धा के गुण भी समझ में आते हैं। समूह में खेलने से सामाजिक भावना आती है।

उत्तर :- (ख) खेल शरीर के लिए ज़रूरी हैं परन्तु उतने ही ज़रूरी अन्य कार्य भी हैं; जैसे – पढ़ाई आदि। यदि खेल स्वास्थ्य के लिए है तो पढ़ाई जैसे कार्य भविष्य को सुधारने के लिए आवश्यक हैं। हमें अपना कार्य समय पर करते रहना चाहिए। ज्ञान वर्धक विषयों पर भी उतना ही ध्यान देंगे और समय देंगे तो अभिभावकों को खेलने पर कोई आपत्ति नहीं होगी ।

8 कर चले हम फ़िदा

कैफ़ी आजमी

प्रश्न 1 :- क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उत्तर :- यह गीत सन् **1962** के भारत–चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया और भारतीय वीरों ने इस आक्रमण का मुकाबला वीरता से किया।

प्रश्न 2:- 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

उत्तर :- हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण गवाँकर देश के मान–सम्मान को सुरक्षित रखा। भारत के सैनिक हर पल देश की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं।

प्रश्न 3 :- इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?

उत्तर :- इस गीत में सैनिकों और भारत की भूमि को प्रेमी–प्रेमिका के रुप में दर्शाया गया है। जिस प्रकार दूल्हे को दुल्हन सबसे प्रिय होती है, उसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी वह बखूबी समझता है, ठीक उसी प्रकार इस धरती रुपी दुल्हन पर सैनिक रुपी प्रेमी कभी विपत्ति सहन नहीं कर सकते। इसी समानता के कारण भारत की धरती को दुल्हन कहा गया है।

प्रश्न 4 :- गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि व जीवन भर याद रह जाते हैं?

उत्तर :- जिन गीतों में भावनात्मकता, मार्मिकता, सच्चाई, गेयता, संगीतात्मकता, लयबद्धता आदि गुण होते हैं, वे गीत जीवन भर याद रहते हैं। 'कर चले हम फ़िदा' गीत में बलिदान की भावना स्पष्ट रुप से झलकती है। इसलिए यह किसी एक विशेष व्यक्ति का गीत न बनकर सभी भारतीयों का गीत बन गया।

प्रश्न 5 :- कवि ने 'साथियों' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उत्तर :- कवि ने 'साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। सभी सैनिकों व देशवासियों को इससे सतर्क रहना होगा |

प्रश्न 6 :- कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उत्तर :- कवि चाहता है कि यदि सैनिकों की टोली शहीद हो जाए, तो अन्य सैनिक युद्ध की राह पर बढ़ जाएँ। यहाँ देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के समूह के लिए 'काफ़िले' शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 7 :- इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर :- 'सर पर कफ़न बाँधना' का अर्थ है – हँसते–हँसते देश की रक्षा के लिए अपने जीवन को बलिदान करने के लिए तैयार रहना। वे शत्रुओं का मुकाबला निडरता पूर्वक करते हैं।

प्रश्न 8 :- इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर :- अपने देश के सम्मान और रक्षा के लिए सैनिक हर चुनौतियों को स्वीकार करके अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं। अपनी अंतिम साँस तक देश के मान की रक्षा कर उसे शत्रुओं से बचाते हैं। कवि इसमें देशभक्ति को विकसित करके देश को जागरुक करना चाहता है।

भाव स्पष्ट कीजिए – (समझाने हेतु)

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर :- इन पंक्तियों में कवि कैफ़ी आज़मी ने भारतीय जवानों के साहस की सराहना की है। चीनी आक्रमण के समय भारतीय जवानों ने हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों पर लड़ाई लड़ी। इस बर्फ़ीली ठंड में उनकी साँस घुटने लगी, साथ ही तापमान कम होने से नब्ज़ भी जमने लगी परन्तु वे किसी भी बात की परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहे और हर मुश्किल का सामना किया।

खींच दो अपने ख़ूँ से ज़मीं पर लकीर

इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उत्तर :- यह गीत की प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ हैं। कवि का भाव है कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। अगर कोई शत्रु रुपी रावण उसकी तरफ़ बढ़ेगा तो अपने खून से लक्ष्मण (सैनिक) रेखा खींच कर उसे बचाएँगे। अत: देश की रक्षा का भार उसी पर है

3 टोपी शुक्ला

राही मासूम रजा

प्रश्न 1 :- इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है ?

उत्तर ;- इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला दोनों गहरे दोस्त थे। एक दूसरे के बिना अधूरे थे परन्तु दोनों की आत्मा में प्यार की प्यास थी। इफ़्फ़न तो अपने मन की बात दादी को या टोपी को कह कर हल्का कर लेता था परन्तु टोपी के लिए इफ़्फ़न और उसकी दादी के अलावा कोई नहीं था। अत: इफ़्फ़न वास्तव में टोपी की कहानी का अटूट हिस्सा है।

प्रश्न 2 :- इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं ?

उत्तर ;- इफ़्फ़न की दादी मौलवी की बेटी न होकर ज़मीदार की बेटी थीं। वह वहाँ दूध, घी, दही खाती थीं। लखनऊ आकर वह इसके लिए तरस गईं। क्योंकि यहाँ मौलविन बन कर रहना पड़ता था। इसलिए उन्हें पीहर जाना अच्छा लगता था।

प्रश्न 3 :- इफ़्फ़न की दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाईं ?

उत्तर ;- दादी का विवाह मौलवी परिवार में हुआ था जहाँ गाना बजाना पसंद नहीं किया जाता था। इसलिए बेचारी दिल मसोस कर रह गईं।

प्रश्न 4 :- 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर ;- 'अम्मी' शब्द को सुनते ही सबकी नज़रें टोपी पर पड़ गई। क्योंकि यह उर्दू का शब्द था और टोपी हिन्दू था। इस शब्द को सुनकर जैसे परम्पराओं की दीवारें डोलने लगीं। घर में सभी हौरान थे। माँ ने डाँटा, दादी गरजी और टोपी की जमकर पिटाई हुई।

प्रश्न 5 :- दस अक्तूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्व रखता है ?

उत्तर ;- दस अक्तूबर सन् पैंतालिस को इफ़्फ़न के पिता का तबादला हो गया और वे चले गएँ। उसके प्रिय दोस्त के चले जाने से वह बहुत दुखी हुआ। उसने कसम खाई कि वह कोई ऐसा दोस्त नहीं बनाएगा जिसकी बदली हो जाती है। एक तो इफ़्फ़न की दादी जिससे वह बहुत प्यार करता था वह नहीं रहीं फिर इफ़्फ़न चला गया तो यह दिन उसके लिए महत्वपूर्ण दिन बन गया।

प्रश्न 6 :- टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही ?

उत्तर ;- इफ़्फ़न की दादी टोपी को बहुत प्यार करती थीं। उनकी मीठी-मीठी बोली उसे तिल के लड्डू या शक्कर/गुड जैसी लगती थी। टोपी की माँ भी ऐसा ही बोलती थीं परन्तु उसकी दादी उसे बोलने नहीं देती थी। उधर इफ़्फ़न के दादा जी व अम्मी को उनकी बोली पंसद नहीं थी। अत: इफ़्फ़न की दादी और टोपी की माँ दोनों एक स्वर की महिलाएँ थीं। यही सोचकर टोपी ने दादी बदलने की बात की।

प्रश्न 7 :- पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से विशेष स्नेह क्यों था ?

उत्तर ;- इफ़्फ़न की दादी उसे बहुत प्यार करती थीं, हर तरह से उसकी सहायता करती थीं। उसके अब्बू अम्मी उसे डाँटते थे, उसकी बाजी और नुज़हत भी उसको परेशान करती थीं। दादी उसको रात में अनार परी, बहराम डाकू, अमीर हमज़ा, गुलब काबली, हातिमताई जैसी अनेकों कहानियाँ सुनाती थीं। इसी कारण वह अपनी दादी से प्यार करता था।

प्रश्न 8 :- इफ़्फ़न की दादी के देहान्त के बाद टोपी को उसका घर खाली सा क्यों लगा ?

उत्तर ;- इफ़्फ़न की दादी जितना प्यार इफ़्फ़न को करती उतना ही टोपी को भी करती थीं, टोपी से अपनत्व रखती थीं। उसे भी कहानियाँ सुनाती थीं, उसकी माँ का हाल चाल पूछती। उनकी मृत्यु के बाद टोपी को ऐसा लगा मानो उस पर से दादी की छत्रछाया ही खत्म हो गई है। इसलिए टोपी को दादी की मृत्यु के बाद इफ़्फ़न का घर खाली सा लगा।

प्रश्न 9 :- टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर ;- टोपी हिन्दू जाति का था और इफ़्फ़न मुस्लिम। परन्तु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। उनकी मीठी पूरबी बोली उसे बहुत अच्छी लगती थी। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। फिर भी उनका हर शब्द उसे गुड़ की डाली सा लगता था। इसलिए उनका रिश्ता अटूट था।

प्रश्न 10 :- टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए –

(क) ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे ?

(ख) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?

(ग) टोपी की भावात्मक परेशानियों को मद्येनज़र रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए

उत्तर ;- (क) टोपी बहुत ज़हीन (बुद्धिमान) था परन्तु दो बार फ़ेल हो गया क्योंकि पहली बार जब भी वह पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई न कोई काम निकल आता या रामदुलारी कोई ऐसी चीज़ मँगवाती जो नौकर से नहीं मँगवाई जा सकती। इस तरह वह फेल हो गया। दूसरे साल उसे मियादी बुखार हो गया था और पेपर नहीं दे पाया इसलिए फ़ेल हो गया था।

उत्तर ;- (ख) पहली बार एक कक्षा छोटे बच्चों के साथ बैठना पड़ा। दूसरे साल सातवीं के बच्चों के साथ बैठना पड़ा था। इसलिए उसका कोई दोस्त नहीं बन पाया था। अध्यापक भी बच्चों को न पढ़ने के कारण फ़ेल होने का उदाहरण टोपी का नाम लेकर देते थे, उसका मज़ाक उड़ाते थे। मास्टर भी उसे नोटिस नहीं करते थे। उससे कोई उत्तर नहीं पूछते बल्कि कहते अगले साल पूछ लेंगे या कहते इतने सालों में तो आ गया होगा। इस तरह सभी उसे भावनात्मक रूप से आहत करते थे। फिर अंत में इन चुनौतियों को स्वीकार कर उसने सफलता प्राप्त की।

उत्तर ;- (ग) बच्चे फ़ेल होने पर भावनात्मक रूप से आहत होते हैं और मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। वे शर्म महसूस करते हैं। इसके लिए विद्यार्थी के पुस्तकीय ज्ञान को ही न परखा जाए बल्कि उसके अनुभव व अन्य कार्य कुशलता को भी देखकर उसे प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किया जा सकता है।

प्रश्न 11 :- इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया ?

उत्तर ;- कस्टोडियन पर जाना अर्थात् सरकारी कब्जा होना। दादी के पीहर वाले जब पाकिस्तान में रहने लगे तो भारत में उनके घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहा। इस पर मालिकाना हक भी न रहा। इसलिए वह घर सरकारी कब्जे में चला गया।

पाठ 3 तताँरा वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई

प्रश्न :- 1 तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?

उत्तर :- तताँरा के बारे में लोगों का यह मत था कि उसकी तलवार लकड़ी की थी औऱ हर समय तताँरा की कमर पर बँधी रहती थी। वह इसका प्रयोग सबके सामने नहीं करता था। उसमें अद्भुत दैवीय शक्ति थी। इसलिए तताँरा के साहसिक कारनामों के चर्चे चारों तरफ़ थे। वास्तव में वह तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

प्रश्न :- 2 वामीरों ने तताँरा को बेरूखी से क्या जवाब दिया ?

उत्तर :- वामीरों ने तताँरा को बेरूखी से जवाब दिया क्योंकि वह अपने गाँव के युवक के अलावा किसी से भी बात नहीं करती थी। पहले वह बताए कि वह कौन है जो इस तरह प्रश्न पूछ रहा है|

प्रश्न :- 3 तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर :- तताँरा-वामीरो के गाँव वालों में पहले आपसी संबंध नहीं थे। विवाह तो दूर वे आपस में बात भी नहीं करते थे परन्तु इनकी त्यागमयी मृत्यु के बाद दोनों के गाँव में आपसी संबंध बनने लगे और वैवाहिक संबंध भी बनने लगे।

प्रश्न :- 4 निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे ?

उत्तर :- निकोबार के लोग तताँरा को उसके आत्मीय स्वभाव के कारण पसन्द करते थे, उससे बेहद प्रेम करते थे। वह नेक ईमानदार और साहसी था। वह मुसीबत के समय भाग भागकर सबकी मदद करता था।

प्रश्न :- 5 निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है ?

उत्तर :- निकोबारियों का विश्वास था कि पहले अडंमान निकोबार दोनों एक ही द्वीप थे। इनके दो होने के पीछे तताँरा-वामीरो की लोक कथा प्रचलित है। ये दोनों प्रेम करते थे। दोनों एक गाँव के नहीं थे। इसलिए रीति अनुसार विवाह नहीं हो सकती थी। रूढ़ियों में जकड़ा होने के कारण वह कुछ कर भी नहीं सकता था। उसे अत्यधिक क्रोध आया और उसने क्रोध में अपनी तलवार धरती में गाड़ दी और उसे खींचते खींचते वह दूर भागता चला गया। इससे ज़मीन दो भागों में बँट गई – एक निकोबार और दूसरा अंडमान।

प्रश्न :- 6 तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया ? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर :- तताँरा दिनभर खूब परिश्रम करने के बाद समुद्र के किनारे टहलने निकल गया। समुद्र से ठंडी हवाएँ आ रही थी। पक्षियों की चहचहाट धीरे-धीरे कम हो रही थी। डुबते सूरज़ की किरणें समुद्र के पानी पर पड़कर रंग-बिरंगी रोशनी छोड़ रही थी। समुद्र का पानी बहते हुए आवाज़ कर रहा था मानो कोई गीत गा रहा हो। पूरा वातावरण बहुत मोहक लग रहा था।

प्रश्न :- 7 वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर :- वामीरो से मिलने के बाद तताँरा बहुत बैचेन रहने लगा। वह अपनी सुधबुध खो बैठा। वह शाम की प्रतिक्षा करता जब वह वामीरो से मिल सके। वह दिन ढलने से पहले ही लपाती की समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। उसे एक-एक पल पहाड़ जैसा लग रहा था। उसे वामीरो के न आने की आशंका होने लगती है। लपाती के रास्ते पर वामीरो को देखने के लिए नज़रे दौड़ाता। जैसे ही वामीरो आई उसे देखते ही वह शब्दहीन हो कटक देखने लगा।

प्रश्न :- 8 प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे ?

उत्तर :- प्राचीन काल में हष्ट पुष्ट पशुओं के साथ शक्ति प्रदर्शन किए जाते थे। लड़ाकू साँडों, शेर, पहलवानों की कुश्ती, तलवार बाजी जैसे शक्ति प्रदर्शन के कार्यक्रम होते थे। तीतर, बटेर की लड़ाई, पंतगबाजी, पैठे लगाना जिसमें विशिष्ठ सामग्रियाँ बिकती। खाने पीने की दुकाने, जानवरों की नुमाइश, ये सभी मनोरंजन के आयोजन होते थे।

प्रश्न :- 9 रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- रूढ़ियां और बंधन समाज को अनुशासित करने के लिए बनते हैं परन्तु इन्हीं के द्वारा मनुष्य की भावना आहत होने लगे, बंधन बनने लगे और बोझ लगने लगे तो उसका टूट जाना ही अच्छा होता है। जिस प्रकार तताँरा वामीरो से प्रेम करता है, उससे विवाह करना चाहता है परन्तु गाँव के लोग तताँरा को पसंद नहीं करते हैं। वे इस समय विरोध करते हैं और अन्त में उन्हें अपनी जान देनी पड़ती है। इस तरह की रूढ़ियाँ भला करने की जगह नुकसान करती हैं तो उन्हें टूट जाना समाज के लिए बेहतर है।

पाठ 4 मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रश्न :- 1 कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?

उत्तर :- प्रत्येक मनुष्य समयानुसार अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है क्योंकि जीवन नश्वर है। इसलिए मृत्यु से डरना नहीं चाहिए बल्कि जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उसे बाद में भी याद रखा जाए। उसकी मृत्यु व्यर्थ न जाए। अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दें। जो केवल अपने लिए जीते हैं वे व्यक्ति नहीं पशु के समान हैं।

प्रश्न :- 2 उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है ?

उत्तर :- उदार व्यक्ति परोपकारी होता है। अपना पूरा जीवन पुण्य व लोकहित कार्यो में बिता देता है। किसी से भेदभाव नहीं रखता, आत्मीय भाव रखता है। कवि और लेखक भी उसके गुणों की चर्चा अपने लेखों में करते हैं। वह निज स्वार्थों का त्याग कर जीवन का मोह भी नहीं रखता।

प्रश्न :- 3 कवि ने दधीचि कर्ण , आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है ?

उत्तर :- कवि दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर त्याग और बलिदान का संदेश देता है कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी परवाह किए बिना लोक हित के लिए कार्य किए। दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दान दी, कर्ण ने अपना सोने का रक्षा कवच दान दे दिया, रति देव ने अपना भोजनथाल ही दे डाला, उशीनर ने कबूतर के लिए अपना माँस दिया इस तरह इन महापुरुषों ने मानव कल्याण की भावना से 'पर' हेतु जीवन दिया।

प्रश्न :- 4 कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व–रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए ?

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

उत्तर :- उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने गर्व–रहित जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी है। कवि का कहना है कि धन संपत्ति आने पर घमंड नहीं करना चाहिए। केवल आप ही सनाथ नहीं हैं। सभी पर ईश्वर की कृपा दृष्टि है। वह सभी को सहारा देता है।

प्रश्न :- 5 'मनुष्य मात्र बंधु है'से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- 'मनुष्य मात्र बंधु है'से तात्पर्य है कि सभी मनुष्य आपस में भाई बंधु हैं क्योंकि सभी का पिता एक ईश्वर है। इसलिए सभी को प्रेम भाव से रहना चाहिए, सहायता करनी चाहिए। कोई पराया नहीं है। सभी एक दूसरे के काम आएँ।

प्रश्न :- 6 कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर :- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है जिससे सब मैत्री भाव से आपस में मिलकर रहें क्योंकि एक होने से सभी कार्य सफल होते हैं ऊँच–नीच, वर्ग भेद नहीं रहता। सभी एक पिता परमेश्वर की संतान हैं। अत: सब एक हैं।

प्रश्न :- 7 व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए ? इस कविता के आधार पर लिखिए ।

उत्तर :- कवि कहना चाहता है कि हमें ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए जो दूसरों के काम आए। मनुष्य को अपने स्वार्थ का त्याग करके परहित के लिए जीना चाहिए। दया, करुणा, परोपकार का भाव रखना चाहिए, घमंड नहीं करना चाहिए। यदि हम दूसरों के लिए जिएँ तो हमारी मृत्यु भी सुमृत्यु बन सकती है।

प्रश्न :- 8 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

उत्तर :- कवि इस कविता द्वारा मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, सदभावना और उदारता का संदेश देना चाहता है। मनुष्य को नि:स्वार्थ जीवन जीना चाहिए। वर्गवाद, अलगाव को दूर करके विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। धन होने पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा खुद आगे बढ़ने के साथ–साथ औरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए।

पाठ 6 अब कहाँ दूसरों के दु:ख से

निदा फाजली

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न :- 1 अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उत्तर :- अरब में नूह नाम के एक पैगंबर थे जिनका असली नाम लशकर था। वे अत्यंत दयालु और संवेदनशील थे। एक बार एक कुत्ते को उन्होंने दुत्कार दिया। उस कुत्ते का जवाब सुनकर वे बहुत दुखी हुए और उम्र भर पश्चाताप करते रहे। अपने करुणा भाव के कारण ही वे 'नूह' के नाम से याद किए जाते हैं।

प्रश्न :- 2 लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

उत्तर :- लेखक की माँ पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं पेड़-पौधों के प्रति भी संवेदनशील थीं। वे सूरज छिपने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने से मना करती थीं। उनका मानना था कि ऐसा करने पर पेड़ों को दुख होगा और वे रोते हुए बद्दुआ देते हैं।

प्रश्न :- 3 प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

प्रकृति में आए असंतुलन का दुष्परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ; जैसे-

- विनाशकारी समुद्री तूफ़ाने आने लगे।
- अत्यधिक गरमी पड़ने लगी।
- असमय बरसातें होने से जन-धन और फ़सलें क्षतिग्रस्त होने लगीं।
- आधियाँ और तूफ़ान आने लगीं।
- नए-नए रोग उत्पन्न हो गए, जिससे पशु-पक्षी असमय मरने लगे।

प्रश्न :- 4 लेखक की माँ ने पूरे दिन रोज़ा क्यों रखा ?

उत्तर :- लेखक के घर एक कबूतर का घोसला था जिसमें दो अंडे थे। एक अंडा बिल्ली ने झपट कर तोड़ दिया, दूसरा अंडा बचाने के लिए माँ उतारने लगीं तो टूट गया। इस पर उन्हें दुख हुआ। माँ ने प्रायश्चित के लिए पूरे दिन रोज़ा रखा और नमाज़ पढ़कर माफी माँगती रहीं।

प्रश्न :- 5 लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया?

उत्तर :- लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक अनेक बदलाव देखे-

- उसके देखते-देखते बहुत सारे पेड़ कट गए।
- नई-नई बस्तियाँ बस गईं।
- चौड़ी सड़कें बन गईं।
- पशु-पक्षी शहर छोड़कर भाग गए। जो बच गए उन्होंने जैसे-तैसे यहाँ-वहाँ घोंसला बना लिया।

'प्रश्न :- 6 डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-'डेरा डालने' का अर्थ है कुछ समय के लिए रहना अर्थात अस्थाई निवास । बड़ी-बड़ी इमारते बनने के कारण पक्षियों को घोंसले बनाने की जगह नहीं मिल रही है। वे इमारतों में ही डेरा डालने लगे हैं।

प्रश्न :- 7 शेख अयाज़ के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर :- एक बार शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर नहाने गए और वापस आए तो उनकी बाजू पर काला च्योंटा चढ़ कर आ गया। जैसे ही वह भोजन करने बैठे च्योंटा बाजू पर आया तो वे एक दम उठ कर चल दिए माँ ने पूछा कि क्या खाना अच्छा नहीं लगा तो उन्होनें जवाब दिया कि मैंने किसी को बेघर कर दिया है। उसे घर छोड़ने जा रहा हूँ । अर्थात वे च्योंटे को कुएँ पर छोड़ने चल दिए।

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न :- 8 बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर :- बढ़ती हुई आबादी ने पर्यावरण पर अत्यंत विपरीत प्रभाव डाला। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ी त्यों-त्यों मनुष्य की आवास और भोजन की जरूरत बढ़ती गई। इसके लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई ताकि लोगों के लिए घर बनाया जा सके। इसके अलावा सागर के किनारे अतिक्रमण कर नई बस्तियाँ बसाई गईं । इन दोनों ही कार्यों से पर्यावरण असंतुलित हुआ। इससे असमय वर्षा, बाढ़, चक्रवात, भूकंप, सूखा, अत्यधिक गरमी एवं आँधी-तूफ़ान के अलावा तरह-तरह के नए-नए रोग फैलने लगे। इस प्रकार बढ़ती आबादी ने पर्यावरण में जहर भर दिया।

प्रश्न :- 9 लेखक की पत्नी को खिड़की मे जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर :- पक्षियों का प्राकृतिक आवास नष्ट होने से पक्षी यहाँ-वहाँ शरण लेने को विवश हुआ। लेखक के फ्लैट के रोशनदान में दो कबूतरों ने अपना डेरा जमा लिया और उसमें अंडे दे दिए | उन अंडों से बच्चे निकल आए थे। छोटे बच्चों की देखभाल के लिए कबूतर वहाँ बार-बार आया-जाया करते थे। इस आवाजाही में कई वस्तुएँ गिरकर टूट जाती थीं। इसके अलावा वे लेखक की पुस्तकें और अन्य वस्तुएँ गंदी कर देते थे। कबूतरों से होने वाली परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली लगवानी पड़ी।

प्रश्न :- 10 समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

उत्तर :- कई सालों से बिल्डर समुद्र को पीछे धकेल रहे थे और उसकी ज़मीन हथिया रहे थे। समुद्र सिमटता जा रहा था। उसने पहले टाँगें समेटी फिर उकडू बैठा फिर खड़ा हो गया। फिर भी

जगह कम पड़ने लगी तो वह गुस्सा हो गया। उसने अपने सीने पर दौड़ती तीन जहाजों को बच्चों की गेंद की भाँति उठाकर फेंक दिया | एक वार्ली के समुद्र के किनारे, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ इंडिया पर टूट फूट गया | ये जहाज़ पहले जैसे चलने योग्य न बन सके। इस प्रकार समुद्र ने अपना गुस्सा निकाला |

समास

समास का तात्पर्य है *"संक्षिप्तीकरण"*

दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

उदाहरण :

रसोईघर - रसोई के लिए घर।

नीलगाय - नीले रंग की गाय।

विद्यालय - विद्या के लिए आलय

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे हम समस्त पद भी कहते हैं।

समास के भेद

हिंदी में समास के छः भेद हैं :

(1) अव्ययीभाव समास

(2) तत्पुरुष समास

(3) द्विगु समास

(4) द्वंद्व समास

(5) कर्मधारय समास

(6) बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है
इसमें पहला पद उपसर्ग होता है जैसे अ, आ, अनु, प्रति, हर, भर, नि, निर, यथा, यावत आदि उपसर्ग शब्द का बोध होता है

उदाहरण

आजन्म - जन्म पर्यन्त
यथावधि - अवधि के अनुसार
यथाक्रम - क्रम के अनुसार
बेकसूर - बिना कसूर के
आजीवन - जीवन भर
आमरण - मरने तक
आसमुद्र - समुद्र तक
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
यथा नियम - नियम के अनुसार
प्रतिदिन - प्रत्येक दिन

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में कारक चिन्हों का प्रयोग होता है|

उदाहरण :
विद्यालय - विद्या **के लिए** आलय
राजपुत्र - राजा **का** पुत्र
मुंहतोड़ - मुंह **को** तोड़ने वाला
चिड़ीमार - चिड़िया **को** मारने वाला
जन्मांध - जन्म **से** अँधा
शरणागत - शरण **को** आगत
सुखप्राप्त - सुख **को** प्राप्त
भयाकुल - भय **से** आकुल
हस्त लिखित - हाथ **से** लिखित
प्रयोगशाला - प्रयोग **के लिए** शाला
देशभक्ति - देश **के लिए** भक्ति
ऋणमुक्त - ऋण **से** मुक्त

स्वास्थ्यरक्षा - स्वास्थ्य **की** रक्षा

आपबीती - आप **पर** बीती

द्विगु समास

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है , विग्रह करने पर समूह का बोध होता है|

उदाहरण :

त्रिलोक - तीनो लोकों का समाहार

नवरात्र - नौ रात्रियों का समूह

अठन्नी - आठ आनो का समूह

पंचतत्व - पांच तत्वों का समूह

चतुर्भुज - चार भुजाओं का समूह

पंचवटी - पाँच वटों का समूह

त्रिफला - तीन फलों का समाहार

दोपहर - दो पहरों का समाहार

चारपाई - चार पायों का समाहार

पंजाब - पाँच आबों का समूह

द्वंद्व समास

इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं | विग्रह करने पर बीच में 'और' / 'या' का बोध होता है|

उदाहरण -

पाप-पुण्य - पाप और पुण्य

सीता-राम - सीता और राम

ऊँच-नीच - ऊँच और नीच

खरा-खोटा - खरा या खोटा

अन्न-जल - अन्न और जल

हार-जीत - हार या जीत

माता-पिता - माता और पिता

सुख-दुःख - सुख और दुःख

आय-व्यय - आय और व्यय

देश-विदेश - देश और विदेश

लाभ-हानि - लाभ और हानि

कर्मधारय समास

इस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है| विग्रह करने पर कोई नया शब्द नहीं बनता|

उदाहरण :

चन्द्रमुख - चन्द्रमा के सामान मुख वाला -

दहीवड़ा - दही में डूबा बड़ा - विशेषता

गुरुदेव - गुरु रूपी देव

चरण कमल - कमल के समान चरण

नील गगन - नीला है जो असमान

पीताम्बर - पीले रंग का अम्बर

परमानन्द - परम हे जो आनंद

पुण्यात्मा पुण्य है जो आत्मा

भलामानस - भला है हो मानस

लालमिर्च - लाल रंग की मिर्च

शुभागमन - शुभ है जी आगमन

घनश्याम - घन के सामान श्याम

भवसागर - संसार रुपी सागर

बहुव्रीहि समास

इस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है विग्रह करने पर नया शब्द निकलता है |यह नया शब्द किसी तीसरे की ओर संकेत करता है |उदाहरण :

त्रिनेत्र - तीन नेत्रों वाला अर्थात **शिव**

वीणापाणी - जिसके हाथों में वीणा हो अर्थात **सरस्वती**

गजानन - गज के सामान आनन् है जिसका अर्थात **गणेश**

गिरधर - गिरि को धारण करने वाले अर्थात **श्रीकृष्ण**

दशानन - दस हैं आनन जिसके अर्थात **रावण**

नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका अर्थात **शिव**

महात्मा - महान है जो आत्मा अर्थात महात्मा **गाँधी**
तिरंगा - तीन है रंग जिसमें अर्थात रास्ट्रीय **ध्वज**
अंशुमाली - अंशु (किरणे) हैं माला जिसकी अर्थात **सूर्य**
मेघनाद - मेघ के समान नाद है जिसका अर्थात रावण - **पुत्र**

पत्र लेखन :- अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को छात्रवृति पाने के लिए पत्र लिखिए |
विज्ञापन लेखन :- किसी कंपनी की घड़ी तथा पंखे के लिए आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिये|

हरिहर काका

मिथिलेश्वर

प्रश्न :- 1 कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं ?

कथावाचक जब छोटा था तब से ही हरिहर काका उसे बहुत प्यार करते थे। जब वह बड़े हो गए तो वह हरिहर काका के मित्र बन गए। गाँव में इतनी गहरी दोस्ती और किसी से नहीं हुई। हरिहर काका उनसे खुल कर बातें करते थे। यही कारण है कि कथावाचक को उनके एक-एक पल की खबर थी। शायद अपना मित्र बनाने के लिए काका ने स्वयं ही उसे प्यार से बड़ा किया और इतंजार किया।

प्रश्न :- 2 हरिहर काका को मंहत और भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे ?

हरिहर काका को अपने भाइयों और महंत में कोई अतंर नहीं लगा। दोनों एक ही श्रेणी के लगे। उनके भाइयों की पत्नियों ने कुछ दिन तक तो हरिहर काका का ध्यान रखा फिर बची-कुची रोटियाँ दी, नाश्ता नहीं देते थे। बीमारी में कोई पूछने वाला भी न था। जितना भी उन्हें रखा जा रहा था, उनकी ज़मीन के लिए था। इसी तरह मंहत ने एक दिन तो बड़े प्यार से खातिर की फिर ज़मीन अपने ठाकुर बाड़ी के नाम करने के लिए कहने लगे। काका के मना करने पर उन्हें अनेक यातनाएँ दी। अपहरण करवाया, मुँह में कपड़ा ठूँस कर एक कोठरी में बंद कर दिया, जबरदस्ती अँगूठे का निशान लिया गया तथा उन्हें मारा पीटा गया। इस तरह दोनों ही केवल ज़मीन जायदाद के लिए हरिहर काका से व्यवहार रखते थे। अत: उन्हें दोनों एक ही श्रेणी के लगे।

प्रश्न :- 3 ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है ?

कहा जाता है गाँव के लोग भोले होते हैं। असल में गाँव के लोग अंधविश्वासी धर्मभीरू होते हैं। मंदिर जैसे स्थान को पवित्र, निश्कलंक, ज्ञान का प्रतीक मानते हैं। पुजारी, पुरोहित मंहत जैसे जितने भी धर्म के ठेकेदार हैं उनपर अगाध श्रद्धा रखते हैं। वे चाहे कितने भी पतित, स्वार्थी और नीच हों पर उनका विरोध करने से वे डरते हैं। इसी कारण ठाकुर बाड़ी के प्रति गाँव वालों की अपार श्रद्धा थी। उनका हर सुख-दुख उससे जुड़ा था।

प्रश्न :- 4 अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

हरिहर काका अनपढ़ थे फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालो की याद आती है।रमेसर की विधवा पत्नी के साथ भी ऐसा ही हुआ था | काका ने उन्हें दुखी होते देखा है। इसलिए उन्होंने ठान लिया था कि चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार मंहत के उकसाने पर भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे परन्तु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया था कि उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं , वह केवल ज़ायदाद के लिए है।

प्रश्न :- 5 हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा व्यवहार किया ?

मंहत ने हरिहर काका को बहुत प्रलोभन दिए जिससे वह अपनी ज़मीन जायदाद ठाकुर बाड़ी के नाम कर दे परन्तु काका इस बात के लिए तैयार नहीं थे। वे सोच रहे थे कि क्या भगवान के लिए अपने भाइयों से धोखा करूँ? यह उन्हें सही भी नहीं लग रहा था। मंहत को यह बात पता लगी तो उसने छल और बल से रात के समय अकेले दालान में सोते हुए हरिहर काका को उठवा लिया। मंहत ने अपने चेले साधुसंतों के साथ मिलकर उनके हाथ पैर बांध दिए, मुहँ में कपड़ा ठूँस दिया और जबरदस्ती अँगूठे के निशान लिए, उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। जब पुलिस आई तो स्वयं गुप्त दरवाज़े से भाग गए।

प्रश्न :- 6 हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

कहानी के आधार पर गाँव के लोगों को बिना बताए पता चल गया कि हरिहर काका को उनके भाई नहीं पूछते। इसलिए सुख आराम का प्रलोभन देकर मंहत उन्हें अपने साथ ले गया। भाई मन्नत करके काका को वापिस ले आते हैं। इस तरह गाँव के लोग दो पक्षों में बँट गए , कुछ लोग मंहत की तरफ़ थे जो चाहते थे कि काका अपनी ज़मीन धर्म के नाम पर ठाकुर बाड़ी को दे दें ताकि उन्हें सुख आराम मिले, मृत्यु के बाद मोक्ष, यश मिले। मंहत ज्ञानी है ,वह सब कुछ जानता है। लेकिन दूसरे पक्ष के लोग कहते कि ज़मीन परिवार वालों को दी जाए। उनका कहना था इससे उनके परिवार का पेट भरेगा। मंदिर को ज़मीन देना अन्याय होगा। इस तरह दोनों पक्ष अपने-अपने हिसाब से सोच रहे थे परन्तु हरिहर काका के बारे में कोई नहीं सोच रहा था। इन

बातों का एक कारण यह भी था कि काका विधुर थे और उनके कोई संतान भी नहीं थी। पंद्रह बीघे ज़मीन के लिए इनका लालच स्वाभविक था।

प्रश्न :- 7 कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

जब काका को असलियत पता चली और उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन जायदाद के पीछे हैं तो उन्हें वे सभी लोग याद आ गए जिन्होंने परिवार वालो के मोह माया में आकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और मृत्यु तक तिलतिल करके मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। जीते जी ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। ये लोग मुझे एक बार में ही मार दे। अत: लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है परन्तु ज्ञान होने पर मृत्यु वरण को तैयार रहता है।

प्रश्न :- 8 समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज़्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते निभाते हैं, अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से मिलते हैं। अमीर रिश्तेदारों का सम्मान करते हैं, उनसे मिलने को आतुर रहते हैं जबकि गरीब रिश्तेदारों से कतराते हैं। केवल स्वार्थ सिद्धि की अहमियत रह गई है। आए दिन हम अखबारों में समाचार पढ़ते हैं कि ज़मीन जाय़दाद, पैसे जेवर के लिए लोग घिनौने से घिनौना कार्य कर जाते हैं (हत्या अपहरण आदि)। इसी प्रकार इस कहानी में भी पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले मंहत जी (काका की) हत्या ही कर देते। उन्हें यह अफसोस रहा कि वे काका को मार नहीं पाए।अतः पाठ के आधार पर रिश्तों को कोई अहमियत नहीं रही |

प्रश्न :- 9 यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे ?

यदि हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो हम उसकी पूरी तरह मदद करने की कोशिश करेंगे। उनसे मिलकर उनके दुख का कारण पता करेंगे, उन्हें अहसास दिलाएँगे कि वे अकेले नहीं हैं। सबसे पहले तो यह विश्वास कराएँगे कि सभी व्यक्ति लालची नहीं होते हैं। इस तरह मौन रह कर दूसरों को मौका न दें बल्कि उल्लास से शेष जीवन बिताएँ। रिश्तेदारों से मिलकर उनके संबंध सुधारने का प्रयत्न करें।

प्रश्न :- 10 हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती ? अपने शब्दों में लिखिए।

यदि काका के गाँव में मीडिया पहुँच जाती तो सबकी पोल खुल जाती, मंहत व भाइयों का पर्दाफाश हो जाता। अपहरण और जबरन अँगूठा लगवाने के अपराध में उन्हें जेल हो जाती।

DPSG

पाठ २ डायरी का एक पन्ना

- सीताराम सेकसरिया

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न 1 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं ?

उत्तर :- 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता शहर ने शहर में जगह-जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले गए तथा झंड़ा फहराया गया था। टोलियाँ बनाकर भीड़ उस स्थान पर जुटने लगी जहाँ सुभाष बाबू का जुलूस पहुँचना था। पुलिस की लाठीचार्ज तथा गिरफ़तारी लोगों के जोश को कम न कर पाए।

प्रश्न 2 'आज जो बात थी वह निराली थी' – किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि स्वतंत्रता दिवस मनाने की प्रथम आवृत्ति थी। पुलिस ने सभा करने को गैरकानूनी कहा था किंतु सुभाष बाबू के आह्वान पर पूरे कलकत्ता में अनेक संगठनों के माध्यम से जुलूस व सभाओं की जोशीली तैयारी थी। पूरा शहर झंडों से सजा था तथा कौंसिल ने मोनुमेंद के नीचे झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का सरकार को खुला चैलेंज दिया हुआ था। पुलिस भरपूर तैयारी के बाद भी कामयाब नहीं हो पाई।

प्रश्न 3 :- पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तर :- पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी जनसभा करना या जुलूस निकालना कानून के खिलाफ़ होगा। सभाओं में भाग लेने वालों को दोषी माना जाएगा। कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इस प्रकार ये दोनों नोटिस एक दुसरे के खिलाफ़ थे।

प्रश्न 4 धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर ;- जब सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया तो स्त्रियाँ जुलूस बनाकर चलीं परन्तु पुलिस ने लाठी चार्ज से उन्हें रोकना चाहा जिससे कुछ लोग वहीं बैठ गए, कुछ घायल हो गए और कुछ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। इसलिए जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5 डा. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फ़ोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- डा. दास गुप्ता लोगों की फ़ोटो खिचवा रहे थे। इससे अंग्रेज़ों के जुल्म का पर्दाफ़ाश किया जा सकता था, दूसरा यह भी पता चल सकता था कि बंगाल में स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत काम हो रहा है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

प्रश्न 6 सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर :- सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भुमिका रही थी। भारी पुलिस व्यवस्था के बाद भी जगह-जगह स्त्री जुलूस के लिए टोलियाँ बन गई थीं। मोनुमेंट पर भी स्त्रियों ने निडर होकर झंडा फहराया, अपनी गिरफ्तारियाँ करवाई तथा उनपर लाठियाँ बरसाई। इनसब के बाद भी स्त्रियाँ लाल बाज़ार तक आगे बढ़ती गईं।

प्रश्न 7 जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर ;- जुलूस के लाल बाज़ार आने पर भीड़ बेकाबू हो गई। पुलिस डंडे बरसा रही थी, लोगों को लॉकअप में भेज रही थी। स्त्रियाँ भी अपनी गिरफ़तारी दे रही थीं। दल के दल नारे लगा रहे थे। लोगों का जोश बढ़ता ही जा रहा था। लाठी चार्ज से लोग घायल हो गए थे। खून बह रहा था। चीख पुकार मची थी फिर भी उत्साह बना हुआ था।

प्रश्न 8 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :- इस समय देश की आज़ादी के लिए हर व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था। अंग्रेज़ों ने कानून बनाकर आन्दोलन, जुलूसों को गैर कानूनी घोषित किया हुआ था परन्तु लोगों पर इसका कोई असर नहीं था। वे आज़ादी के लिए अपना प्रदर्शन करते रहे, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करते रहे थे।

प्रश्न 9 बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में कलकत्ता वासियों ने स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी ज़ोर-शोर से की थी। पुलिस की सख्ती, लाठी चार्ज, गिरफ़तारियाँ, इन सब के बाद भी लोगों में जोश बना रहा। लोग झंडे फहराते, वंदे मातरम बोलते हुए, खून बहाते हुए भी जुलूस निकालने को तत्पर थे। जुलूस टूटता फिर बन जाता। कलकत्ता के इतिहास में इतने प्रचंड रूप में लोगों को पहले कभी नहीं देखा गया था।

मुहावरे

अभ्यास कार्य

निम्न लिखित मुहावरों के वाक्य में प्रयोग कीजिये :-

1. प्राण सूखना - डर लगना।

2 आँखें फोड़ना - बड़े ध्यान से पढ़ना।

3 गाढ़ी कमाई - मेहनत की कमाई।

4 ज़िगर के टुकड़े-टुकड़े होना - दिल पर भारी आघात लगना।

5 दबे पाँव आना-चोरी - चोरी आना।

6 घुड़कियाँ खाना-डाँट - डपट सहना।

7 घाव पर नमक छिड़कना - दुखी को और दुखी करना।

8 तलवार खींचना - लड़ाई के लिए तैयार रहना।

9 अंधे के हाथ बटेर लगना - अयोग्य को कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु मिलना।

10 आटे-दाल का भाव मालूम होना - वास्तविकता का पता चलाना |

11 हाथ-पाँव फूल जाना - परेशानी देखकर घबरा जाना।

12 रंग दिखाना - प्रभाव या स्वरूप दिखाना।

13 ठंडा पड़ना - ढीला पड़ना।

14 टूट जाना - बिखर जाना।

15 दाँतों पसीना आना - बहुत अधिक परेशानी उठाना।

अपठित गद्यांश

1. प्रस्तुत गद्यांश को पढ़िए और उचित विकल्पों का चयन करके उत्तर दीजिये –

राहे पर खड़ा है, सदा से ठूँठ नहीं है। दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने दूर करता था। पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टंग गया हो। रात में वह काले भूत-सा लगता है, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका-सा 'अभिप्राय' और न मिलेगा। प्रचंड धूप में भी उसका सूखा शरीर उतनी ही गहरी छाया ज़मीन पर डालता जैसे रात की उजियारी चांदनी में।जब से होश संभाला है, जब से आंख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है।

पर पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों और की राहें मिलती हैं और जिनके सहारे जीवन अविरल बहता है। जिसने कभी जल को जीवन की संज्ञा दी, उसने निश्चय जाना होगा की प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति विकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभाग्यों परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है – उसके अंदर का स्नेहरस सूख जाने से संख्या का लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

1. जनसंकुल का क्या आश्य है?

क) जनसंपर्क

ख) भीड़भरा

ग) जनसमूह

घ) जनजीवन

2. आम की छतनार डालियों के कारण क्या होता था?

क) यात्रियों को ठंडक मिलती थी

ख) यात्रियों को विश्राम मिलता था

ग) यात्रियों की थकान मिटती थी

घ) यात्रियों को हवा मिलती थी

3. शाखाहीन, रसहीन, शुष्क वृक्ष को क्या कहा जाता है?

क) नीरस वृक्ष

ख) जड़ वृक्ष

ग) ठूँठ वृक्ष

घ) हीन वृक्ष

4. आम के वृक्ष के सामने पीपल और बरगद के शरमाने का क्या कारण था?

क) उसका अधिक हरा-भरा और सघन होना

ख) हवा की आवाज सुनाई देना

ग) अधिक फल फूल लगना

घ) अधिक ऊँचा होना

5. आम के अभागेपन में संभवतः एक ही सुखद अपवाद था –

क) उसका नीरस हो जाना

ख) संज्ञा लुप्त हो जाना

ग) सूख कर ठूँठ हो जाना

घ) अनुभूति कम हो जाना

वाक्य रूपांतरण

वाक्य

अपने मन के भाव-विचार प्रकट करने के लिए हम भाषा का सहारा लेते हैं और वाक्यों के रूप में प्रकट करते हैं। कभी-कभी कुछ शब्दों से ही काम चला लेते हैं पर हमेशा ऐसा नहीं हो सकता है। वाक्य शब्दों के मेल से बनते हैं जो अपने में कुछ न कुछ अर्थ छिपाए रहते हैं। अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए इन शब्दों को एक व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है। इस तरह सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह जो पूरा आशय प्रकट करता है, उसे वाक्य कहते हैं। अतः वाक्य –

1. **सार्थक शब्दों (पदों) के मेल से बनते हैं।**
2. **पूर्ण और स्वतंत्र होते हैं।**
3. **वक्ता की कही बातों का आशय स्पष्ट करते हैं।**

4. शब्दों का एक निश्चित क्रम रखते हैं। हिंदी के वाक्यों का पद क्रम इस तरह होता है।

वाक्य-भेद

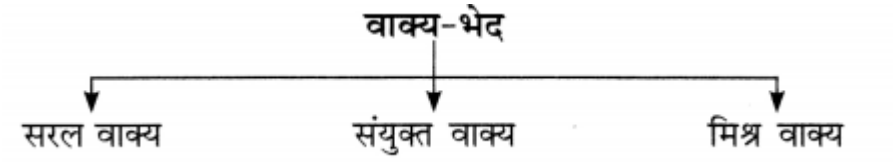

1. सरल वाक्य

सरल वाक्य एक कर्ता तथा एक क्रिया के मेल से बनता है। इसमें कोई उपवाक्य जुड़ा नहीं होता है।

जैसे- कछुए ने खरगोश को हरा दिया।

नौकर ने समय पर काम पूरा कर लिया।

ड्राइवर समय से बस लेकर नहीं आया।

पक्षी शाम होते ही घोंसले की ओर लौट आते हैं।

. संयुक्त वाक्य

जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य किसी योजक (समुच्चयबोधक अव्यय) द्वारा जुड़े होते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

संयुक्त वाक्य की विशेषताएँ –

1. संयुक्त वाक्य के उपवाक्य आपस में योजकों- या, वा, अथवा, इसलिए, और, किंतु, परंतु, लेकिन, तथा, एवं आदि से जुड़े होते हैं।
2. इनमें प्रयुक्त उपवाक्य स्वतंत्र अर्थ का बोध कराते हैं।
3. इनमें प्रयुक्त उपवाक्य समान स्तर के होते हैं।
4. इन्हें समानाधिकृत उपवाक्य अथवा समानाधिकरण उपवाक्य भी कहते हैं।

संयुक्त वाक्य के कुछ उदाहरण

- आप नाटक देखने जाएँगे या सिनेमा।
- मरीज फल खा लेगा अथवा खिचड़ी से काम चलेगा।
- मदन को बस नहीं मिली इसलिए वह समय पर घर न आ सका।
- हम दोनों मंदिर गए और साथ-साथ पूजा की।
- बादल घिरे किंतु बरसात न हुई। वाक्य-भेद
- वह दिन भर काम करता रहा परंतु पूरा न हो सका।
- बाज़ार से कलम लाना तथा पेंसिल अवश्य लाना।
- उसने मेट्रो की सवारी की एवं ए०सी० का आनंद लिया।

3. मिश्रवाक्य

जिस वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य जुड़े हो, परंतु उनमें एक प्रधान उपवाक्य हो तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रवाक्य कहते हैं।

- **मिश्रवाक्य में आश्रित या गौण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होते हैं।**
- **मिश्रवाक्य व्यधिकरण योजकों के युग्म-जैसा-वैसा, जो-सो, जिसकी-उसकी, जहाँ-वहाँ, जब-तब, जैसी-वैसी, यदि-तो, – जब तक-तब तक, जिन्हें-उन्हें आदि से जुड़े होते हैं।**
- **स्वतंत्र उपवाक्य को प्रधान उपवाक्य भी कहा जाता है।**

मिश्रवाक्य के कुछ उदाहरण

- **माँ ने कहा कि शाम को जल्दी लौट आना।**
- **जब मैं घर पहुँचा तब वर्षा शुरू हो चुकी थी।**
- **जैसे ही बादल घिरे वैसे ही बिजली चमकने लगी।**
- **जब-जब धरती पर अधर्म बढ़ा है, तब-तब ईश्वर धरती पर अवतरित हुए हैं।**
- **जहाँ-जहाँ सिंचाई की व्यवस्था है, वहाँ-वहाँ फसलें खूब पैदा होती हैं।**
- **वाक्य रचनांतरण या रूपांतरण**

- **किसी वाक्य से दूसरे वाक्य में इस तरह बदलना कि उसका मूलभाव अपरिवर्तित रहे, वाक्य रचनांतरण या रूपांतरण कहलाता है। वाक्य रूपांतरण के अंतर्गत सरल वाक्यों को संयुक्त और मिश्र में, संयुक्त वालों को सरल और मिश्रवाक्य में तथा मिश्रवाक्य को सरल और संयुक्त वाक्य में बदला जाता है; जैसे –**

- **(i) धमाका होते ही लोग घरों से बाहर निकल आए। (सरल वाक्य)**
  धमाका हुआ और लोग घरों से बाहर निकल आए। (संयुक्त वाक्य)
  जैसे ही धमाका हुआ लोग घरों से बाहर निकल आए। (मिश्र वाक्य)

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1.

निम्नलिखित वाक्यों को रचना के भेद के आधार पर पहचानकर लिखिए –

1. वह बाज़ार गई और स्वेटर लाई।
2. घंटी बजते ही छात्र कक्षाओं में चले गए।
3. यद्यपि वह ईमानदार है फिर भी काम से जी चुराता है।
4. बुढ़िया रो रही थी इसलिए मैंने उससे रोने का कारण पूछा।
5. जब हेलीकॉप्टर से खाना गिराया गया तब लोगों को भोजन मिला।
6. बिजली आई परंतु टीवी न चली।

7. दोनों देश के सैनिक घमासान युद्ध कर रहे थे।
8. वर्षा रुकी और खेल शुरू हो गया।

उत्तर:

1. संयुक्त वाक्य
2. सरल वाक्य
3. मिश्र वाक्य
4. संयुक्त वाक्य
5. मिश्र वाक्य
6. संयुक्त वाक्य
7. सरल वाक्य
8. संयुक्त वाक्य।

प्रश्न 2.
नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए –

1. सवेरा होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगी। (संयुक्त वाक्य)
2. पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया और उसे मुँह की खानी पड़ी। (सरल वाक्य)
3. जब थाने में शिकायत की गई तब लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ। (मिश्र वाक्य)
4. परिश्रमी लोगों के लिए कोई काम असंभव नहीं होता। (संयुक्त वाक्य)
5. आकाश में बादल छाते ही शीतल हवा बहने लगी। (मिश्र वाक्य)
6. अध्यापक कक्षा में आए और पढ़ाने लगे। (मिश्र वाक्य)
7. अभिनेता अमिताभ बच्चन को सदी का महानायक कहा जाता है। (मिश्र वाक्य)
8. परिश्रम करो और सफ़लता प्राप्त करो। (सरल वाक्य)

उत्तर

1. सवेरा हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगी ।
2. जब पाकिस्तान ने हमला किया तब उसे मुँह की खानी पड़ी ।
3. थाने में शिकायत करने पर लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ।
4. जो लोग परिश्रमी होते हैं उनके लिए कोई काम असंभव नहीं होता है ।
5. आकाश में बादल छाए और शीतल हवा बहने लगी ।
6. जब अध्यापक कक्षा में आए तब वे पढ़ाने लगे ।
7. अमिताभ बच्चन वही अभिनेता हैं जिन्हें सदी का महानायक कहा जाता है ।
8. परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो ।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित वाक्यों को रचना के भेद के आधार पर पहचानकर लिखिए –

1. मनोज घर आते ही मैच देखने लगा।
2. जो छात्र विज्ञान में रुचि लेते हैं वही डॉक्टर इंजीनियर बनते हैं।
3. आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी।
4. बच्चे को सड़क पार करनी थी, पर वह साइकिल से टकरा गया।
5. गौरैयों को पकड़ने वाली बिल्ली को कुत्ते ने काट खाया।
6. वह आलसी है और कामचोर भी।
7. जब विवाह सकुशल पार हो गया तब लड़की के पिता ने चैन की साँस ली।

उत्तर:

1. सरल वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य
4. संयुक्त वाक्य
5. सरल वाक्य
6. संयुक्त वाक्य
7. मिश्र वाक्य।

प्रश्न 4.
नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए:-

1. वे कार्यकर्ता कहाँ हैं जिन्होंने चुनाव जितवाए हैं। (सरल वाक्य)
2. किसान खेत में गया और फसल काटने लगा। (मिश्र वाक्य)
3. धमाके में पुल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। (मिश्र वाक्य)
4. मैं मोबाइल फ़ोन खरीदने बाज़ार गया। (संयुक्त वाक्य)
5. दीवालें गंदी करने वाले छात्रों को दंडित किया जाएगा। (मिश्र वाक्य)
6. सेठ बहुत मोटा है इसलिए तेज़ चल नहीं सकता।(सरल वाक्य)
7. एक बजते ही सर्कस का शो शुरू हो गया। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर:

1. चुनाव जिताने वाले कार्यकर्ता कहाँ हैं?
2. जब किसान खेत में गया तब वह फ़सल काटने लगा।
3. जैसे ही धमाका हुआ पुल के टुकड़े-टुकड़े हो गए।
4. मैं बाज़ार गया और मोबाइल फ़ोन खरीदा। ।
5. जो छात्र दीवालें गंदी करेंगे उन्हें दंडित किया जाएगा।
6. मोटा सेठ तेज़ नहीं चल सकता है।
7. एक बजा और सर्कस शुरू हो गया।

अलंकार

'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – आभूषण
अलंकार शब्द दो शब्दों के योग से बना है –

अलम् + कार
↓ ↓
शोभा + करने वाला

जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है।
अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

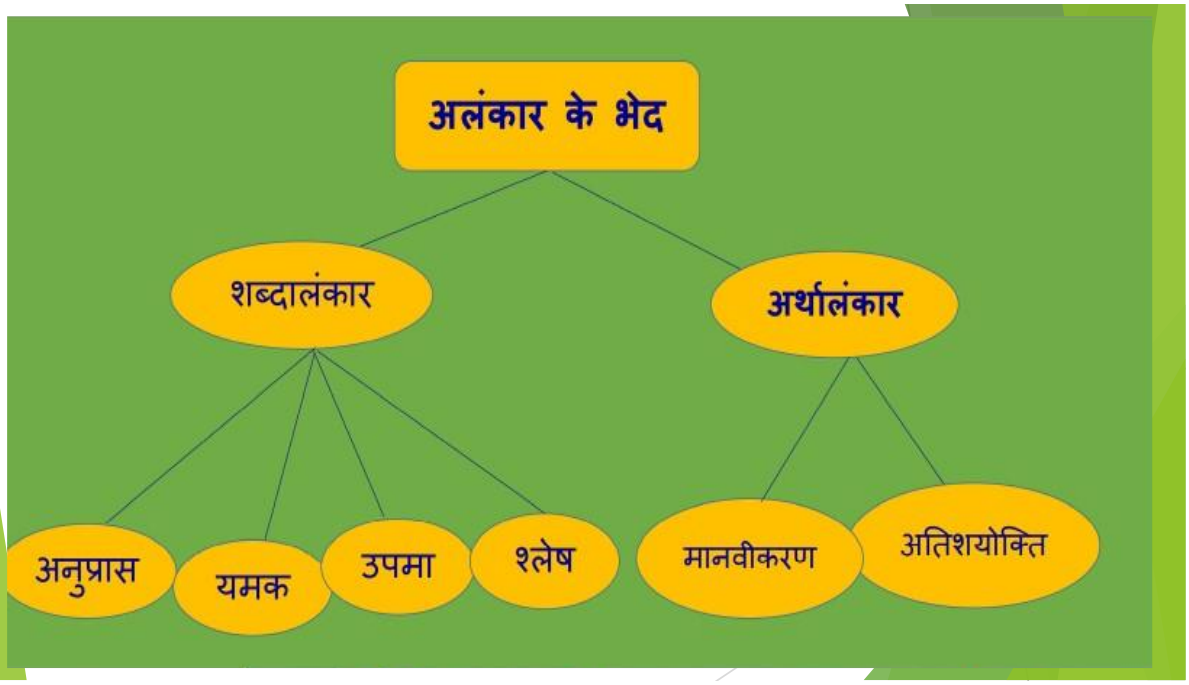

अनुप्रास अलंकार

जहां पर एक या एक से अधिक वर्णों (व्यंजन) की आवृत्ति एक से अधिक बार होती हैं वहां पर अनुप्रास अलंकार होता हैं।

उदाहरण

- मधुर मधुर मुस्कान मनोहर , मनुज वेश का उजियाला।

उपर्युक्त उदाहरण में **'म'** वर्ण की आवृति हो रही है, एवं हम जानते हैं की जब किसी वाक्य में किसी वर्ण या व्यंजन की एक से अधिक बार आवृति होती है तब वहां अनुप्रास अलंकार होता है। अतएव यह उदाहरण अनुप्रास अलंकार के अंतर्गत आएगा।

अन्य उदहारण

- चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।
- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
- कल कानन कुंडल मोरपखा उर पा बनमाल बिराजती है।
- कालिंदी कूल कदम्ब की डरनी।

अन्य उदाहरण

माला फेरत जग गया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।

ऊपर दिए गए पद्य में **'मनका'** शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। पहली बार **'मनका'** का आशय माला के मोती से है और दूसरी बार **'मनका'** से आशय है मन की भावनाओ से।अतः **'मनका'** शब्द का दो बार प्रयोग और भिन्नार्थ के कारण उक्त पंक्तियों में यमक अलंकार की छटा दिखती है।

कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी ।

जैसा कि आप देख सकते हैं की ऊपर दिए गए वाक्य में **'बेनी'** शब्द दो बार आया है। दोनों बार इस शब्द का अर्थ अलग है।पहली बार **'बेनी'** शब्द कवि की तरफ संकेत कर रहा है। दूसरी बार **'बेनी'** शब्द चोटी के बारे में बता रहा है। अतः उक्त पंक्तियों में यमक अलंकार है।

श्लेष अलंकार

- **श्लेष अलंकार - श्लेष का अर्थ है – 'चिपका हुआ या छिपा हुआ' अर्थात जहाँ एक ही शब्द से एक से अधिक अर्थ चिपके या छिपे रहते हैं, वहाँ 'श्लेष अलंकार' होता है; जैसे-**
  - **रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।**
    पानी गए ऊबरै, मोती, मानुष, चून ॥

(यहाँ 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं- मोती के अर्थ में चमक, मनुष्य के अर्थ में सम्मान और चूने के अर्थ में जल । अतः यहाँ श्लेष अलंकार है ।

अन्य उदाहरण

मंगन को देख पट देत बार-बार ।

यहाँ पट शब्द के दो अर्थ हैं एक है – दरवाज़ा और दूसरे का अर्थ है वस्त्र ।

जे रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे उजियारो करै, बढ़े अंधेरो होय होय।

जैसा कि आप ऊपर उदाहरण में देख सकते हैं कि रहीम जी ने दोहे के द्वारा दीये एवं कुपुत्र के चरित्र को एक जैसा दर्शाने की कोशिश की है। रहीम जी कहते हैं कि शुरू में दोनों ही उजाला करते हैं लेकिन बढ़ने पर अन्धेरा हो जाता है।यहाँ बढे शब्द से दो विभिन्न अर्थ निकल रहे हैं। दीपक के सन्दर्भ में बढ़ने का मतलब है बुझ जाना जिससे अन्धेरा हो जाता है। कुपुत्र के सन्दर्भ में बढ़ने से मतलब है बड़ा हो जाना। बड़े होने पर कुपुत्र कुकर्म करता है जिससे परिवार में अँधेरा छा जाता है। एक शब्द से ही दो विभिन्न अर्थ निकल रहे हैं अतः यह उदाहरण श्लेष अलंकार के अंतर्गत आएगा।

उपमा अलंकार

जब किन्हीं दो वस्तुओं के गुण, आकृति, स्वभाव आदि में समानता दिखाई जाए या दो भिन्न वस्तुओं की तुलना की जाए, तब वहां उपमा अलंकर होता है।उपमा अलंकार में एक वस्तु या प्राणी की तुलना दूसरी प्रसिद्ध वस्तु के साथ की जाती है।

उदाहरण

हरि पद कोमल कमल।

ऊपर दिए गए उदाहरण में हरि के पैरों की तुलना कमल के फूल से की गयी है। यहाँ पर हरि के चरणों को कमल के फूल के सामान कोमल बताया गया है। यहाँ उपमान एवं उपमेय में कोई साधारण धर्म होने की वजह से तुलना की जा रही है अतः यह उदाहरण उपमा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

अन्य उदाहरण

कर कमल-सा कोमल हैं।

ऊपर दिए गए उदाहरण में कर अर्थात हाथ को कमल के समान कोमल बताया गया है। वाक्य में दो वस्तुओं की तुलना की गई है अतः यह उदाहरण उपमा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

पीपर पात सरिस मन ड़ोला।

ऊपर दिए गए उदाहरण में मन को पीपल के पत्ते की तरह हिलता हुआ बताया जा रहा है। इस उदाहरण में **'मन' – उपमेय** है, '**पीपर पात' – उपमान** है, '**डोला' – साधारण धर्म** है एवं '**सरिस'** अर्थात **'के सामान' – वाचक शब्द** है। जैसा की हम जानते हैं की जब किन्ही दो वस्तुओं की उनके एक समान धर्म की वजह से तुलना की जाती है तब वहां उपमा अलंकार होता है।

रूपक अलंकार

- रूपक अलंकार - जहाँ गुणों की समानता दर्शाने के लिए दोनों वस्तुओं को अभिन्न मान लिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है । दूसरे शब्दों में, 'उपमेय' में 'उपमान' का आरोप कर दिया जाता है । जैसे-
- पायो जी मैंने राम-रतन-धन पायो ।

  (यहाँ 'राम' नाम में 'रतन धन' का आरोप होने से रूपक अलंकार है ।)

मानवीकरण अलंकार

जहाँ निर्जीव पदार्थों पर मानवीय क्रियाओं व भावनाओं का आरोपण किया जाए , वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जहाँ जड़-चेतन पदार्थों को मानव क्रिया करते हुए दिखाया जाए, वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण–

"सागर के उर पर नाच-नाच
करती हैं लहरें मधुर गान।"

लहरों को मानव की तरह नाचते-गाते बताया गया है।

'हे रजनी बाले ! सजधज कर तुम कहाँ चली ?'

रात्रि को बाला की तरह बताया गया है।

उषा उदास आती है।
मुख पीला ले जाती है॥

यहाँ ' उषा ' निर्जीव है , परंतु उसे मानव की भाँति उदास दिखाया गया है।

राजेश कुमार ईड़ीवाल मेघवंशी, अजमेर
8280991621

अन्य उदहारण

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

ऊपर के उदाहरण में दिया गया है कि बादल बड़े सज कर आए लेकिन ये सब क्रियाएं तो मनुष्य की होती हैं न कि बादलों की। अतएव यह उदाहरण मानवीकरण अलंकार के अंतर्गत आएगा।ये असलियत में संभव नहीं है एवं हम यह भी जानते हैं कि जब सजीव भावनाओं का वर्णन चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

- उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।
- कलियाँ दरवाज़े खोल खोल जब झुरमुट में मुस्काती हैं।

अतिशयोक्ति अलंकार

जब किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का वर्णन बहुत बाधा चढ़ा कर किया जाए तब वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है। इस अलंकार में नामुमकिन तथ्य बोले जाते हैं।

उदाहरण

हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग,
लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।

ऊपर दिए गए उदाहरण में कहा गया है कि अभी हनुमान की पूंछ में आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलकर राख हो गयी और सारे राक्षस भाग खड़े हुए।यह बात बिलकुल असंभव है एवं लोक सीमा से बढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

अतिशयोक्ति अलंकार

जब किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का वर्णन बहुत बाधा चढ़ा कर किया जाए तब वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है। इस अलंकार में नामुमकिन तथ्य बोले जाते हैं।

उदाहरण

हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग,
लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।

ऊपर दिए गए उदाहरण में कहा गया है कि अभी हनुमान की पूंछ में आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलकर राख हो गयी और सारे राक्षस भाग खड़े हुए।यह बात बिलकुल असंभव है एवं लोक सीमा से बढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

अनुच्छेद लेखन

सबसे प्यारा देश हमारा
अथवा
विश्व की शान-भारत

- भौगोलिक स्थिति
- प्राकृतिक सौंदर्य
- विविधता में एकता की भावना
- अत्यंत प्राचीन संस्कृति।

सौभाग्य से दुनिया के जिस भू-भाग पर मुझे जन्म लेने का अवसर मिला , दुनिया उसे भारत के नाम से जानती है। हमारा देश एशिया महाद्वीप के दक्षिणी छोर पर स्थित है। यह देश तीन ओर समुद्र से घिरा है। इसके उत्तर में पर्वतराज हिमालय हैं, जिसके चरण सागर पखारता है। इसके पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। चीन, भूटान, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि इसके पड़ोसी देश हैं।हमारे देश का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है। हिमालय की बरफ़ से ढंकी सफ़ेद चोटियाँ भारत के सिर पर रखे मुकुट में जड़े हीरे-सी प्रतीत होती हैं।यहाँ बहने वाली गंगा-यमुना, घाघरा, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ इसके सीने पर धवल हार जैसी लगती हैं। चारों ओर लहराती हरी-भरी फ़सलें और वृक्ष इसका परिधान प्रतीत होते हैं। यहाँ के जंगलों में हरियाली का साम्राज्य है। भारत में नाना प्रकार की विविधता दृष्टिगोचर होती है।यहाँ विभिन्न जाति-धर्म के अनेक भाषा-भाषी रहते है। यहाँ के परिधान, त्योहार मनाने अनुच्छेद लेखन के ढंग और खान-पान व रहन-सहन में खूब विविधता मिलती है।यहाँ की जलवायु में भी विविधता का बोलबाला है, फिर भी इस विविधता के मूल में एकता छिपी है। देश पर कोई संकट आते ही सभी भारतीय एकजुट हो जाते हैं। हमारे देश की संस्कृति अत्यंत प्राचीन और समृद्धिशाली है।परस्पर एकता, प्रेम, सहयोग और सहभाव से रहना भारतीयों की विशेषता रही है। 'अतिथि देवो भवः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भारतीय संस्कृति का आधार है। हमारा देश भारत विश्व की शान है जो अपनी अलग पहचान रखता है। हमें अपने देश पर गर्व है।

भारतीय नारी की दोहरी भूमिका
अथवा
कामकाजी स्त्रियों की चुनौतियाँ

- प्राचीनकाल में नारी की स्थिति
- वर्तमान में नौकरी की आवश्यकता
- दोहरी भूमिका और चुनौतियाँ
- सुरक्षा और सोच में बदलाव की आवश्यकता।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह परिवर्तन समय के साथ स्वतः होता रहता है। मनुष्य भी इस बदलाव से अछूता नहीं है। प्राचीन काल में मनुष्य ने न इतना विकास किया था और न वह इतना सभ्य हो पाया था। तब उसकी आवश्यकताएँ सीमित थीं। ऐसे में पुरुष की कमाई से घर चल जाता था और नारी की भूमिका घर तक सीमित थी। उसे बाहर जाकर काम करने की आवश्यकता न थी।वर्तमान समय में मनुष्य की आवश्यकता इतनी बढ़ी हुई है कि इसे पूरा करने के लिए पुरुष की कमाई अपर्याप्त सिद्ध हो रही है और नारी को नौकरी के लिए घर से बाहर कदम बढ़ाना पड़ा।आज की नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लगभग हर क्षेत्र में काम करती दिखाई देती हैं। आज की नारी दोहरी भूमिका का निर्वाह कर रही है।घर में उसे खाना पकाने, घर की सफ़ाई, बच्चों की देखभाल और उनकी शिक्षा का दायित्व है तो वह कार्यालयों के अलावा खेल, राजनीति साहित्य और कला आदि क्षेत्रों में उतनी ही कुशलता और तत्परता से कार्य कर रही है। वह दोनों जगह की ज़िम्मेदारियों की चुनौतियों को सहर्ष स्वीकारती हुई आगे बढ़ रही है और दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रही है।वर्तमान में नारी द्वारा घर से बाहर आकर काम करने पर सुरक्षा की आवश्यकता महसूस होने लगी है। कुछ लोगों की सोच ऐसी बन गई है कि वे ऐसी स्त्रियों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। ऐसी स्त्रियों को प्रायः कार्यालय में पुरुष सहकर्मियों तथा आते-जाते कुछ लोगों की कुदृष्टि का सामना करना पड़ता है। इसके लिए समाज को अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है।

पाठ 1 बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

प्रश्न :- 1 कथा नायक की रूचि किन कार्यों में थी ?

उत्तर :- कथा नायक की रूचि खेल कूद, कँकरियाँ उछालने, कागज़ की तितलियाँ बनाने, उड़ाने, उछलकूद करने, चार दीवारी पर चढ़कर नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर उसे मोटर कार बना कर मस्ती करने कनकौवे उड़ाने में थी |

प्रश्न : 2 छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उत्तर :- छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई के लिए टाइम-टेबिल बनाते समय उसने सोचा कि अब वह मन लगाकर पड़ेंगे और वे खेलने कूदने नहीं जायेंगे । रात ग्यारह बजे तक हर विषय का कार्यक्रम बनाया गया परन्तु पढ़ाई करते समय खेल के मैदान, उसकी हरियाली , हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबॉल की उछलकूद, कबड्डी बालीबॉल की तेज़ी सब चीजें उन्हें अपनी ओर खींचती और वे टाइम टेबल का पालन नहीं कर पाते थे ।

प्रश्न :- 3 एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर :- एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचे तो बड़े भाई ने छोटे भाई को बहुत डाँटा। उन्होंने उसे पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि अव्वल आने पर उन्हें घंमड हो गया है। उनके अनुसार घमंड तो रावण जैसे चक्रवर्ती राजा तक का भी नहीं रहा तो तुमने तो महज एक कक्षा ही पास किया है। अतः छोटे भाई को चाहिए कि घमंड छोड़कर पढ़ाई की ओर ध्यान दे।

प्रश्न :- 4 बड़े भाई को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं ?

उत्तर :- बड़े भाई होस्टल में छोटे भाई के अभिभावक के रूप में थे। वे छोटे भाई के समक्ष आदर्श भाई का मिशाल कायम रखने ले लिए अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखते थे। उन्हें भी खेलने पंतग उड़ाने तमाशे देखने का शौक था परन्तु अगर वे ठीक रास्ते पर न चलते तो भाई के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी कैसे निभाते। अपने नैतिक कर्त्तव्य का बोध करके वे अनुशासित रहते इन्हीं कारणों से बड़े भाई को अपने मन की इच्छाएं दबानी पड़ती थी |

प्रश्न :- 5 बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब छोटे भाई को पढ़ाई करने तथा घमंड न करने की सलाह देते थे | क्योंकि बड़े भाई का मानना था कि जिसने भी घमंड किया वह दीन दुनिया दोनों से गया | वे रावण , शैतान व शाहेरूम का उदाहरण देकर समझाते हैं कि उन्हें घमंड नहीं करना चाहिए |

प्रश्न :- 6 छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया ?

उत्तर :- छोटे भाई बड़े भाई की नरमी का अनुचित लाभ उठाने लगे । अब वे स्वच्छंदी हो गए थे तथा उनका आत्म-सम्मान भी बढ़ गया । बड़े भाई का रौब नहीं रहा इसलिए उन्होंने पढ़ना लिखना बंद कर दिया , उन्हें

विश्वास हो गया कि उनकी तकदीर बलवान है | वे पढ़े चाहे न पढ़े ,पास हो जाएंगे । वे आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगे | अब सारा समय वे पतंगबाजी में व्यतीत करने लगे |

प्रश्न :- 7 बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर :- बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो छोटा भाई कभी कक्षा में अव्वल नहीं आते | यदि बड़े भाई साहब उन्हें डाँटते- फटकारते नहीं तो वे जितना पढ़ते थे , उतना भी नहीं पढ़ पाते और अपना समय खेलकूद में ही गँवा देते | कक्षा में पास होना है तो पुस्तकें पढ़नी पड़ेंगी | कुशाग्र बुद्धि का होने के कारण वे जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करते थे उन्हें बड़े भाई की डाँट फटकार का डर था। इसी कारण वह थोड़ा बहुत पढ़ लिया करते थे |

प्रश्न :- 8 बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है ? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब ने समूची शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेजी बोलने, लिखने, पढ़ने पर ज़ोर देती है। आए या न आए पर उस पर बल दिया जाता है। विषय की अधिकता व विस्तार होने के कारण बच्चों को याद करने में कठिनाई होती है | बच्चों का आकलन उसकी लेखन क्षमता के आधार पर किया जाता है | इसलिए रटंत विद्या पर जोर दिया जाता है | अर्थ समझ में आए न आए पर रटकर बच्चा विषय में पास हो जाता है। साथ ही अलजबरा, ज्योमेट्री जैसे विषय बड़े भाई को निरर्थक प्रतीत होते हैं उनके अनुसार जीवन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है । अपने देश के इतिहास के साथ दूसरे देश के इतिहास को भी पढ़ना पड़ता है जो ज़रूरी नहीं है। समय की उपयोगिता पर लम्बे चौड़े निबंध लिखना समय की बरबादी नहीं तो और क्या है ? ऐसी शिक्षा जो लाभदायक कम और बोझ ज़्यादा हो ठीक नहीं होती है ।

प्रश्न :- 9 बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर :- बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती बल्कि अनुभव से आती है। इसके लिए उन्होंने अम्माँ, दादा व हैडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए हैं कि वे पढ़े लिखे न होने पर भी हर समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेते हैं। अनुभवी व्यक्ति को जीवन की समझ होती है, वे हर परिस्थिति में अपने को ढालने की क्षमता रखते हैं।

प्रश्न :- 10 छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर :- एक दिन पतंग उड़ाते समय बड़े भाई साहब ने उन्हें पकड़ लिया। उन्होंने छोटे भाई को समझाया की किस प्रकार पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान महत्वपूर्ण है | उन्होंने बताया कि कैसे वे उनके भविष्य के कारण अपने बचपन का गला घोंट रहे हैं। उनकी बातें सुनकर छोटे भाई की आँखें खुल गईं । उन्हें समझ में आ गया कि उनके अव्वल आने के पीछे बड़े भाई की ही प्रेरणा रही है। उनके लिए बड़े भाई अपने मन की इच्छा को दबा कर रखते हैं | जब छोटे भाई को इस बात का एहसास हुआ तो उनके मन में अपने बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई ।

प्रश्न :- 11 बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए |

उत्तर :- बड़े भाई साहब **अध्ययनशील** हैं, हमेशा किताबे खोले बैठे रहते हैं, **घोर परिश्रमी** हैं। चाहे उन्हें समझ में न भी आए परिश्रम करते रहते हैं। वह **वाकपदु** भी हैं, छोटे भाई को तरह तरह से समझाते हैं। उन्हें बडप्पन का अहसास है। इसलिए वह छोटे भाई को भी समझाते हैं। **उपदेश देने की कला में निपुण** हैं , जब भी मौका मिलता वे छोटे भाई को उपदेश देते थे | **अनुभवी** होने से जीवन में अनुभव की महत्ता समझाते हैं । वे **कर्तव्य परायण** हैं , अपने बड़ों का आदर करते हैं , और अपनी **जिम्मेदारी** को अच्छी तरह से समझते हैं | वे **अनुशासन प्रिय** थे , अपने छोटे भाई को अनुशासित रखना चाहते थे | **समय के पाबंद** थे , अपने छोटे भाई को समय का सदुपयोग करने की सलाह देते थे |

प्रश्न :- 12 बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर :- बड़े भाई साहब ने जिदंगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण माना है। जो ज्ञान बड़ों को है वह पुस्तकें पढ़ कर हासिल नहीं होता है। ज़िंदगी के अनुभव उन्हें ठोस धरातल देते हैं जिससे हर परिस्थिति का सामना किया जा सकता है। पुस्तकें व्यवहार की भूमि नहीं होती है। गलत-सही, उचित-अनुचित की जानकारी अनुभवों से ही आती है। अपनी माँ तथा पिताजी का उदाहरण देकर वे इसी बात को समझाने की कोशिश करते हैं कि उनके पास कोई डिग्री नहीं थी फिर भी जीवन में हजारों ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान उन्हें हमसे ज्यादा है | अत: जीवन के अनुभव किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

काव्य 1 कबीर की साखी

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए –

प्रश्न 1 मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर : जब भी हम मीठी वाणी बोलते हैं, तो उसका प्रभाव चमत्कारिक होता है। इससे सुनने वाले की आत्मा तृप्त होती है और मन प्रसन्न होता है। उसके मन से क्रोध और घृणा के भाव नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही हमारा अंत:करण भी प्रसन्न हो जाता है। प्रभाव स्वरुप औरों को सुख और शीतलता प्राप्त होती है।

प्रश्न 2 :- दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- गहरे अंधकार में जब दीपक जलाया जाता है तो अँधेरा मिट जाता है और उजाला फैल जाता है। कबीरदास जी कहते हैं उसी प्रकार ज्ञान रुपी दीपक जब हृदय में जलता है तो अज्ञान रुपी अंधकार मिट जाता है मन के विकार अर्थात संशय, भ्रम आदि नष्ट हो जाते हैं। तभी उसे सर्वव्यापी ईश्वर की प्राप्ति भी होती है।

प्रश्न 3 :- ईश्वर कण–कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर :- ईश्वर सब ओर व्याप्त है। वह निराकार है। हमारा मन अज्ञानता, अहंकार, विलासिताओं में डूबा है। इसलिए हम उसे नहीं देख पाते हैं। हम उसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा सब जगह ढूँढने की कोशिश करते हैं लेकिन जब हमारी अज्ञानता समाप्त होती है हम अंतरात्मा का दीपक जलाते हैं तो अपने ही अंदर समाया ईश्वर हम देख पाते हैं।

प्रश्न 4 :- संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- कवि के अनुसार संसार में वो लोग सुखी हैं, जो संसार में व्याप्त सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं और दुखी वे हैं, जिन्हें ज्ञान की प्राप्ति हो गई है। 'सोना' अज्ञानता का प्रतीक है और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। जो लोग सांसारिक सुखों में खोए रहते हैं, जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं वे सोए हुए हैं और जो सांसारिक सुखों को व्यर्थ समझते हैं, अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करते हैं वे ही जागते हैं। वे संसार की दुर्दशा को दूर करने के लिए चिंतित रहते हैं, सोते नहीं है अर्थात जाग्रत अवस्था में रहते हैं।

प्रश्न 5 :- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर :- कबीर का कहना है कि हम अपने स्वभाव को निर्मल, निष्कपट और सरल बनाए रखना चाहते हैं तो हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियों को बता सके। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

प्रश्न 6 :- 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई' –इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर :- इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए एक अक्षर प्रेम का अर्थात ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े पोथे या ग्रन्थ पढ़ कर भी हर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल परमात्मा का नाम स्मरण करने से ही सच्चा ज्ञानी बना जा सकता है। अर्थात ईश्वर को पाने के लिए सांसारिक लोभ माया को छोड़ना पड़ता है।

प्रश्न 7 ;- कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

कबीर ने अपनी साखियाँ सधुक्कड़ी भाषा में लिखी है। इनकी भाषा मिलीजुली है। इनकी साखियाँ संदेश देने वाली होती हैं। वे जैसा बोलते थे वैसा ही लिखा है। लोकभाषा का भी प्रयोग हुआ है;जैसे– खायै, नेग, मुवा, जाल्या, आँगणि आदि भाषा में लयबद्धता, उपदेशात्मकता, प्रवाह, सहजता, सरलता शैली है।

प्रश्न :- 8 बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ। भाव स्पष्ट कीजिए |

इस कविता का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रुपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

प्रश्न :- 9 कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन भाव स्पष्ट कीजिए |

इस पंक्ति में कवि कहता है कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि से आती सुगंध पर मोहित रहता है परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है। वह उसे इधर-उधर ढूँढता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अज्ञानतावश वास्तविकता को नहीं जानता कि ईश्वर उसी में निवास करता है और उसे प्राप्त करने के लिए धार्मिक स्थलों, अनुष्ठानों में ढूँढता रहता है।

काव्य 2 मीरा के पद

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न :- 1 पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है ?

उत्तर :- मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती की है – प्रभु जिस प्रकार आपने द्रोपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रुप धारण करके हिरण्यकश्यप को मार कर प्रह्लाद को बचाया, मगरमच्छ ने जब हाथी को अपने मुँह में ले लिया तो उसे बचाया और पीड़ा भी हरी। हे प्रभु ! इसी तरह मुझे भी हर संकट से बचाकर पीड़ा मुक्त करो।

प्रश्न :- 2 दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- मीरा का हृदय कृष्ण के पास रहना चाहता है। उसे पाने के लिए इतना अधीर है कि वह उनकी सेविका बनना चाहती हैं। वह बाग-बगीचे लगाना चाहती हैं जिसमें श्री कृष्ण घूमें, कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गीत गाएँ ताकि उनके नाम के स्मरण का लाभ उठा सके। इस प्रकार वह कृष्ण का नाम, भावभक्ति और स्मरण की जागीर अपने पास रखना चाहती हैं और अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

प्रश्न :- 3 मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप–सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उत्तर :- मीरा ने कृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके सिर पर मोर के पंखों का मुकुट है, वे पीले वस्त्र पहने हैं और गले में वैजंती फूलों की माला पहनी है, वे बाँसुरी बजाते हुए गायें चराते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं।

प्रश्न :- 4 मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर :- मीराबाई की भाषा शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसके साथ ही गुजराती शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है, पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक आदि अलंकार इसमें हैं।

प्रश्न :- 5 वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या–क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

उत्तर :- मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने को तैयार हैं। वह सेवक बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती हैं। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे–ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को कृष्ण से मिलकर उनके दर्शन करना चाहती हैं।

काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :-
हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रुप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
उत्तर :- इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रुप का वर्णन किया है। वे कहती हैं – "हे हरि ! जिस प्रकार आपने अपने भक्तजनों की पीड़ा हरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार

द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रुप धारण कर आपने रक्षा की, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। 'र' ध्वनि का बारबार प्रयोग हुआ है तथा 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

उत्तर :- इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण से अपने दुख दूर करने की प्रार्थना की है। हे भक्त वत्सल जैसे – डूबते गजराज को बचाया और उसकी रक्षा की वैसे ही आपकी दासी मीरा प्रार्थना करती है कि उसकी पीड़ा दूर करो। इसमें दास्य भक्तिरस है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार है, भाषा सरल तथा सहज है।

काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :-

चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

इसमें मीरा कृष्ण की चाकरी करने के लिए तैयार है क्योंकि इससे वह उनके दर्शन, नाम, स्मरण और भावभक्ति पा सकती है। इसमें दास्य भाव दर्शाया गया है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार, रुपक अलंकार और कुछ तुकांत शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-**
दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते हैं, जो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं- सड़क पर ठेला लगानेवाला, दूधवाला, नगर निगम का सफाईकर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारा सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा, वेतन, परंपरागत चलन और व्यवसाय के स्तर पर कुछ लोग निम्न स्तर पर कार्य करते हैं तो कुछ उच्च स्तर पर। एक माली के कार्य को सरकारी कार्यालय के किसी सचिव के कार्य से अति निम्न स्तर का माना जाता है, किंतु यदि यही अपने कार्य को कुशलतापूर्वक करता है और उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करता है तो उसका कार्य उस सचिव के कार्य से कहीं बेहतर है, जो अपने काम में ढिलाई बरतता है तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं करता। क्या आप ऐसे सचिव को एक आदर्श अधिकारी कह सकते हैं? वास्तव में पद महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण होता है, कार्य के प्रति समर्पण-भाव और कार्य-प्रणाली में पारदर्शिता। इस संदर्भ में गाँधी जी से उत्कृष्ट उदाहरण और किसका दिया जा सकता है, जिन्होंने अपने हर कार्य को गरिमामय मानते हुए किया। वे अपने सहयोगियों को श्रम की गरिमा की सीख दिया करते थे।
दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने सफ़ाई करने जैसे कार्य को भी कभी नीचा नहीं समझा और इसी कारण स्वयं उनकी पत्नी कस्तूरबा से भी उनके मतभेद हो गए थे।
बाबा आमटे ने समाज द्वारा तिरस्कृत कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। सुंदरलाल बहुगुणा ने अपने प्रसिद्ध 'चिपको आंदोलन' के माध्यम से पेड़ों को संरक्षण प्रदान किया। फादर डेमियन ऑफ मोलोकाई, मार्टिन लूथर किंग और मदर टेरेसा जैसी महान आत्माओं ने इसी सत्य को ग्रहण किया। इनमें से किसी ने भी कोई सत्ता प्राप्त नहीं की, बल्कि अपने जन-कल्याणकारी कार्यों से लोगों के दिलों पर शासन किया। गाँधी जी का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष उनके जीवन का एक पहलू है,

किंतु उनका मानसिक क्षितिज वास्तव में एक राष्ट्र की सीमाओं में बँधा हुआ नहीं था। उन्होंने सभी लोगों में ईश्वर के दर्शन किए। यही कारण था कि कभी किसी पंचायत तक के सदस्य नहीं बनने वाले गाँधी जी की जब मृत्यु हुई तो अमेरिका का राष्ट्रध्वज भी झुका दिया गया था।

<u>प्रश्न :</u>

(क) विभिन्न व्यवसाय करने वाले लोगों के समाज में निम्न स्तर और उच्च स्तर को किस आधार पर तय किया जाता है।

(ख) एक माली अथवा सफाईकर्मी का कार्य किसी सचिव के कार्य से बेहतर कैसे माना जा सकता है?

(ग) गाँधी जी काम के प्रति क्या दृष्टिकोण रखते थे। उनका अपनी पत्नी के साथ क्यों मतभेद हो गया?

(घ) बाबा आमटे, सुंदरलाल बहुगुणा, मदर टेरेसा आदि का उल्लेख क्यों किया गया है ?

(ङ) गाँधी जी की मृत्यु पर अमेरिका का राष्ट्रध्वज क्यों झुका दिया गया?

(च) उपर्युक्त गदयांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

<u>उत्तर</u> :-

(क) विभिन्न व्यवसाय करने वाले लोगों के समाज में निम्नस्तर और उच्च स्तर को उनकी शिक्षा वेतन व्यवसाय आदि के आधार पर तय किया जाता है। उच्च शिक्षित तथा अधिक वेतन पाने वाले व्यक्ति के काम को उच्च स्तर का तथा माली जैसों के काम को निम्न स्तर का माना जाता है।

(ख) एक माली अथवा सफाईकर्मी अपना काम पूरी निष्ठा ईमानदारी, ज़िम्मेदारी और कुशलता से करता है तो उसका कार्य उस सचिव के कार्य से बेहतर है जो अपने काम पर ध्यान नहीं देता है या अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन नहीं करता है।

(ग) गाँधी जी सफ़ाई करने जैसे कार्य को गरिमामय मानते थे। वे अपने सहयोगियों को श्रम करने की सीख देते थे फिर खुद श्रम से कैसे पीछे रहते। उन्होंने सफ़ाई का काम स्वयं करना शुरू कर दिया। इसी बात पर उनका पत्नी के साथ झगड़ा हो गया।

(घ) बाबा आमटे ने समाज द्वारा तिरस्कृत कुष्ठ रोगियों की सेवा की सुंदरलाल बहुगुणा ने चिपको आंदोलन चलाकर पेडों को करने से बचाया तथा मदर टेरेसा ने रोगियों की सेवा की। उन्होंने अपने कार्य को अत्यंत लगन से किया, इसलिए उनका नाम उल्लिखित है।

(ङ) गाँधी जी की मृत्यु पर अमेरिका ने उनके सम्मान में अपना राष्ट्र ध्वज झुका दिया। गाँधी जी किसी एक व्यक्ति या राष्ट्र की भलाई के लिए काम न करके समूची मानवता की भलाई के लिए काम कर रहे थे।

(च) छात्र स्वयं लिखेंगे।

शब्द और पद

शब्द की परिभाषा :- वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं | शब्द स्वतंत्रत होते हैं व शब्द कोश में पाए जाते हैं |

जैसे – फूल ,पेड़ , नदी , जल , तालाब , कमल , पर्वत आदि |

पद की परिभाषा :- जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वह पद बन जाता है |पद व्याकरणिक नियमों से बंधे होते हैं | इसलिए ये स्वतंत्र नहीं होते |

जैसे :- बगीचे में फूल खिले हैं |

बच्चे पेड़ के नीचे खेल रहे हैं |

तालाब में कमल का फूल खिला है |

शब्द और पद में अंतर ;-

- शब्द भाषा की स्वतंत्रत इकाई है जबकि पद वाक्य में प्रयुक्त शब्द होता है जो व्याकरण के नियमों से बंधा होता है |
- पद वाक्य की आवश्यकता के अनुसार बदलता रहता है परन्तु शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता है |
- शब्द के उदाहरण :- फूल ,पेड़ , नदी , जल , तालाब , कमल , पर्वत
- पद के उदाहरण :- हम गर्मियों में पर्वत प्रदेश में घूमने के लिए जायेंगे |

हमारा राष्ट्रीय फूल कमल है |

पदबंध- जब कोई पद-समूह किसी एक इकाई अर्थात् पद जैसे – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण या क्रिया पद का कार्य करता है तो उन्हें पदबंध कहते हैं।
परिभाषा – वाक्य में प्रयोग किए जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। जब एक से अधिक पद मिलकर व्याकरण पर आधारित इकाई का निर्माण करते हैं तब उस बँधी हुई इकाई को पदबंध कहते हैं। जैसे – देवकी नन्दन कृष्ण ने गोपियों का मन मोह लिया।

पदबंध के भेद
पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं –
(1) संज्ञा-पदबंध
(2) विशेषण-पदबंध
(3) सर्वनाम पदबंध
(4) क्रिया पदबंध
(5) क्रिया विशेषण पदबंध

(1) सज्ञा-पदबध- जो पद-समूह संज्ञा पद का काम करता है, उसे संज्ञा - पदबंध कहलाता है।
दूसरे शब्दो मे- पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'सज्ञा पदबंध' कहलाता है।
जैसे-
(1) चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।
(2) राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
(3) अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
(4) आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।
उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'संज्ञा पदबंध' है।

(2) सर्वनाम पदबंध-वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम का कार्य करे, सर्वनाम पदबंध कहलाता है।
जैसे-
1. बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने बालक को डूबने से बचा लिया।
2. शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ पकड़े गए।
3. विरोध करने वाले लोगों में से कोई नहीं बोला।
4. छात्रावास में रहनेवाले तुम सब बाज़ार में क्या कर रहे हो ?
उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द सर्वनाम पदबंध हैं क्योंकि वे क्रमशः 'आपने', 'कुछ', 'सब' और 'कोई' इन सर्वनाम शब्दों से सम्बद्ध हैं।

(3) विशेषण पदबध-वह पदबंध जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाता हुआ विशेषण का कार्य करे, विशेषण पदबंध कहलाता है।
दूसरे शब्दो मे- पदबंध का शीर्ष अथवा अंतिम शब्द यदि विशेषण हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'विशेषण पदबंध' कहलाता है।
जैसे-
(a) तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
(b) उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
(c) उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आज्ञाकारी है।
(d) बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।
उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' है।

(4) क्रिया पदबंध- क्रिया-पदों का जो समूह क्रिया का कार्य करता है,उसे क्रिया पदबंध कहते है ।
जैसे-
(1) वह बाजार की ओर आया होगा।
(2) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।
(3) सुरेश नदी में डूब गया।
(4) अब दरवाजा खोला जा सकता है।
(5) गायकी नाचते हुए गा रही थी ।
उपर्युक्त वाक्यों में काले छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' है।

अभ्यास कार्य (पदबंध)

निम्न लिखित वाक्यों में रेखांकन के आधार पर पदबंध पहचानिए :-

1. **तेज चलने वाली** गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

2. **शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ** पकड़े गए।

3. अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**

4. **बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने** बालक को डूबने से बचा लिया।

5. उसका घोड़ा **अत्यंत सुंदर, फुरतीला** और **आज्ञाकारी** है।

6. **सुबह से शाम तक** वह बैठा रहा।

7. अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**

8. **अयोध्या के राजा दशरथ** के चार पुत्र थे।

9. **उस घर के कोने में बैठा हुआ** आदमी जासूस है।

10. मुझे मोहन छत से **दिखाई दे रहा है।**

11. **तालाब में खिला कमल** का फूल बहुत सुंदर है।

12. **तकदीर का मारा मैं** कहाँ आ पहुँचा?

13. विद्यार्थी **पढ़कर सो गए हैं।**

14. सोहन बहुत **धीरे-धीरे** बोलता है।

15. **सस्ता खरीदा हुआ** कपड़ा नहीं चलता।

अनुच्छेद लेखन

विषय : वन और पर्यावरण का सम्बन्ध

संकेत-बिंदु -

वन प्रदूषण-निवारण में सहायक,
वनों की उपयोगिता,
वन संरक्षण की आवश्यकता,
वन संरक्षण के उपाय।

वन और पर्यावरण का बहुत गहरा सम्बन्ध है। प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने के लिए पृथ्वी के 33% भाग को अवश्य हरा-भरा होना चाहिए। वन जीवनदायक हैं। ये वर्षा कराने में सहायक होते हैं। धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वनों से भूमि का कटाव रोका जा सकता है। वनों से रेगिस्तान का फैलाव रुकता है, सूखा कम पड़ता है। इससे ध्वनि प्रदूषण की भयंकर समस्या से भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के भण्डार हैं। वनों से हमें लकड़ी, फल, फूल, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होते हैं। आज भारत में दुर्भाग्य से केवल 23 % वन बचे हैं। जैसे-जैसे उद्योगों को संख्या बढ़ रही है, शहरीकरण हो रहा है, वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे वनों की आवश्यकता और बढ़ती जा रही है। वन संरक्षण एक कठिन एवं महत्वपूर्ण काम है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी और अपना योगदान देना होगा। अपने घर-मोहल्ले, नगर में अत्यधिक संख्या में वृक्षारोपण को बढ़ाकर इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा। तभी हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ रख पाएँगे।

सूचना लेखन

मनुष्य जिज्ञासु प्राणी है। वह तरह-तरह की जानकारियों से अवगत होना चाहता है। वह सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। इसी तरह सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ भी कुछ आवश्यक सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाना चाहती हैं। जन साधारण की भलाई हेतु वे समय-समय पर ऐसा करती रहती हैं। इन सूचनाओं को जनता तक लिखित रूप में पहुँचाना सूचना-लेखन कहलाता है। सूचना-लेखन के माध्यम से जन साधारण से सीधे संवाद स्थापित किया जाता है। इसके माध्यम से कम खर्च और अल्प परिश्रम से अधिकाधिक लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाई जाती हैं। छात्रों को भी तरह-तरह की सूचनाएँ विद्यालय के सूचनापट्ट पर लिखी मिलती हैं। सूचनाएँ प्रायः ऐसे स्थान पर लिखी जाती हैं, जहाँ लोगों द्वारा वे आसानी से देखी और पढ़ी जा सकें। इन्हें कॉलोनियों और रिहायशी इलाकों के मुख्य द्वार पर या प्रायः कॉलोनी के सूचनापट्टों पर लिखी मिल

सूचना-लेखन में ध्यान देने योग्य बातें-

- सूचना प्रायः तीन या चार वाक्यों में लिखी जानी चाहिए।

- सूचना पूर्ण और आसानी से समझ में आने वाली होनी चाहिए।
- सूचना सरल शब्दों में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना की भाषा प्रभावपूर्ण और मर्यादित शब्दों में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना की लिखावट पठनीय होनी चाहिए।
- सूचना देने वाले का नाम या स्थान विशेष की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।
- सूचना देने वाले के हस्ताक्षर और दिनांक अवश्य लिखा जाना चाहिए।

सूचना-लेखन की विधि

- सूचना लेखन में सबसे ऊपर विद्यालय या संस्था का नाम लिखा जाता है। इससे ज्ञात होता है कि सूचना किस कार्यालय द्वारा दी जा रही है; जैसे-

विद्या भारती सेकेंड्री स्कूल, ज्योति नगर, दिल्ली

खेल परिषद

- अगली पंक्ति में मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए

सूचना

इसके बाद शीर्षक और उसके नीचे अगले एक अनुच्छेद में इस तरह लिखनी चाहिए –

हमारे विद्यालय की खेल परिषद दवारा आगामी सोमवार को प्रात: 9 बजे एक टायल कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसके माध्यम से विभिन्न खेलों-क्रिकेट, टेबल-टेनिस, लंबी दौड़, फुटबॉल, वॉलीबाल, कबड्डी आदि की टीम बनाने हेतु संभावित खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। जो छात्र-छात्राएँ इसमें अपनी खेल प्रतिभा दिखाना चाहते हैं वे अधोहस्ताक्षरी के पास तीन दिनों के भीतर अपना नामांकन अवश्य करा दें।
करतार सिंह
(खेल शिक्षक)
सचिव, खेल परिषद्
इस तरह हमने देखा कि –

1. सूचना की भाषा की अपनी अलग विशेषता होती है।
2. इसे अन्य पुरुष में लिखा जाता है, जैसे सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि।
3. सूचना लेखन में कम शब्दों के माध्यम से गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है।
4. शीर्षक बीच में दो-तीन शब्दों का होता है; जैसे
    - रक्तदान शिविर का आयोजन
    - कवि सम्मेलन का आयोजन
    - दिल्ली दर्शन का कार्यक्रम
5. अंत में बाएँ कोने में सूचना लेखक का नाम, पद आदि का उल्लेख होता है।

सूचना-लेखन के कुछ उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है-

प्रश्नः 1.
आप केंद्रीय विद्यालय जलवायु विहार दिल्ली की सांस्कृतिक इकाई के सचिव प्रत्यूष/प्रत्यूषा हैं। आपके विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर देशभक्ति पूर्ण कविताओं का पाठ किया जाना है जिसमें शहर के प्रसिद्ध कवि पधार रहे हैं। इसमें छात्र-छात्राओं के अभिभावक भी सादर आमंत्रित हैं। इस संबंध में एक सूचना आलेखन कीजिए |

उत्तर:

केंद्रीय विद्यालय, जलवायु विहार, दिल्ली

सूचना

08 अगस्त, 20XX

कवि सम्मेलन का आयोजन

आपको यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि लोगों में देशभक्ति भावना भरने करने के लिए विद्यालय परिसर में देशभक्ति पूर्ण कविता-पाठ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें शहर के प्रसिद्ध कवियों को आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम इस प्रकार है—

दिनांक — 14 अगस्त

समय — सायं 7 बजे

स्थान — विद्यालय परिसर

कार्यक्रम में प्रवेश पास द्वारा ही दिया जाएगा। पास के लिए अधोहस्ताक्षरी से संपर्क करें।

प्रत्यूष
(सचिव)
सांस्कृतिक इकाई